विशेषांक संपादन :डॉ.सुनीता शर्मा

निर्दलीय

अन्तर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

वर्ष १८ अंक १ | नई दिल्ली , जनवरी २०२३ | मूल्य १०/- विशेषांक-५०/-

प्रवासी भारतीय अवदान पर केन्द्रित विशेषांक-२

प्रधान संपादक-कैलाश आदमी

निर्दलीय/ हर अंक विशेषांक नवम्बर- २०२२

निर्दलीय निवेदन

निर्दलीय दैनिक / साप्ताहिक /मासिक (मुद्रित आकार)का शुल्क भेजना भी अब आसान हो गया है क्योंकि अब आप भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा भोपाल के हमारे निर्दलीय के खाता क्रमांक- 30030303507(IFSC code-sbin0001308 **के अलावा हमारे मोबाइल फोन** 9424443401 **से जुड़े फोन पे, या पेटीएम से भी शुल्क भेज सकते हैं। दैनिक,साप्ताहिक व मासिक मुद्रित के साथ ई-पेपर भी हैं। ई-पत्रिका या पेपर हेतु शुल्क भेजना ऐछिक है।**

मासिक पत्रिका (विशेषांक) रु. 50/- वार्षिक : रु. 600/-(स्पीड पोस्ट रु. 1000)

संरक्षक/सलाहकार पद प्रतिष्ठार्थ

वार्षिक : रु. 5000/- तीन वर्ष 11000/- पाँच वर्ष : रु. 20000/-

नोट- दैनिक निर्दलीय प्रति अंक दो रू. (वार्षिक एक हजार रू.), साप्ताहिक 'निर्दलीय' प्रति अंक पांच रु.(वार्षिक शुल्क ५०० रू) साधारण डाक व्यय सहित। स्पीड पोस्ट से मंगवाना है तो ५००/१०००रू. अतिरिक्त। साप्ताहिक व मासिक निर्दलीय दोनों डाक से मंगवाना है तो कुल राशि २०००रू. भेजें।

व्यवस्थापकीय पता -निर्दलीय, एफ 116/7 शिवाजी नगर, भोपाल 462016

निर्दलीय मंगाना अब आसान

वे सृजनधर्मी जो ***निर्दलीय*** (दैनिक/साप्ताहिक/मासिक) निर्दलीय मंगाना चाहते है वे अपने जिला मुख्यालय पर हमारे कार्यलय प्रमुख संपर्क करें जिन्हें कोई पुराना अंक मंगाना है वे प्रति अंक (दैनिक) पांच रूपये, साप्ताहिक दस रूपये और मासिक निर्दलीय की एक प्रति सौ रूपये भेजकर मंगा सकते हैं। अंक उपलब्ध होने पर हम उन्हें पंजीकृत डाक से भेजेंगे। यदि वर्ष २०२२ में प्रकाशित होने वाले अंक मांगना है जिनमें आपकी रचनाएं छपी होंगी उसकी दर भी उपरोक्त अनुसार होगी किन्तु वर्ष २०२२-२३ के लिए वार्षिक ग्राहक बनने हेतु हमें साप्ताहिक निर्दलीय हेतु ५०० रूपये और मासिक निर्दलीय हेतु छै सौ रुपये धनादेश (मनीआर्डर) से या निम्न खाते में भेजना होंगे -

खाताधारक का नाम- निर्दलीय Nirdaliya
बैंक-भारतीय स्टेट बैंक
शाखा- मुख्य शाखा, भोपाल ४६२००३
खाता क्र.३०००३०३०३५०७ (30030303507) आईएफएससी कोड
-एसबीआईएन ०००१३०८ (sbin 0001308)

दैनिक निर्दलीय,साप्ताहिक निर्दलीय और मासिक निर्दलीय की वार्षिक ग्राहकी हेतु हमारे दूरभाष 9424443401 पर phone pay/paytm के जरिए जमा कर स्क्रीन प्रिंट भेजें। -*प्रबंधक*

संपर्क-9424443401/8839797498, ई-मेल nirdaliyadaily@gmai.com

अंतरंग

स्तंभ/ शीर्षक	लेखक/ कवि/संस्मरण/समीक्षा	पृष्ठ
आमुख/प्रवासी भारतीयों का अवदान	कैलाश 'आदमी'	४-५
दो शब्द/घटनाओं से सीख	डॉ. सुनीता शर्मा	६
समीक्षा/चिर प्रतीक्षित	कविता सुल्हवान	७-८
समाचार/ वेल्गिटन में हिन्दी.....	डॉ. सुनीता शर्मा	९-१०
समीक्षा/चिर प्रतीक्षित	डॉ. देवेन्द्र तोमर	११-१४
लघु कथा/मुझे मर जाने दो	शशि महाजन	१५
कविताएं....,	अनीता कपूर, इला प्रसाद	१६
समाचार/विश्व हिंदी दिवस	डॉ. सुनीता शर्मा	१७
कविताएं/गजल, आंसू, मैं प्रवासी	सोमनाथ, प्रगीत कुंअर, वैशाली	१८
संस्मरण/नई सरहद का अनुभव	डॉ. अनिता कपूर	१९-२०
कविताएं.....,	डॉ. सुनीता शर्मा	२१
कविताएं/कन्यादान, दुनिया	प्रोमिला दुवा, रश्मि सिंह	२२
कविताएं/ तिरंगे से हुई बात	रीना दयाल	२३
भाषा ज्ञान/ आप सीख सकते हैं स्पेनिस	पूजा-अनिल	२४-२५
साक्षात्कार/पदवेश व्यवसाय	सुरेश खांडवेकर	२६-२७
साक्षात्कार/हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि हेतु समर्पित	सुनीता शर्मा/नवनीत कौर मरवाह	२८
चिंतन/ अच्छा लेखन	सुरेश खांडवेकर	२९-३३

संरक्षक- सुरेन्द्र नाथ दुबे, मेघा पाटकर, जनकलाल ठाकुर,डॉ. पवन कुमार जैन, रमेश सिंह राघव (९५३६०९५३८६)

मासिक ***निर्दलीय***- राघव भवन, गली क्रं. ६/७२ दयालपुर, दिल्ली-११००९०

प्रबंध संपादक - रमेश सिंह राघव

कार्यकारी संपादक - प्रिंस अभिशेख अज्ञानी (९८२६४२२८२०)
सह संपादकद्वय - सरिता गर्ग 'सरि' (भारत) व डॉ. सुनीता शर्मा (प्रवासी भारत/ विदेश)
उप संपादक - डॉ. अर्चना मिश्रा (बंगलुरू), स्वर्ण ज्योति (पुद्दूचेरी)

सलाहकार संपादक - राजेन्द्र शर्मा 'अक्षर', प्रबंध सम्पादक- अशोक 'निर्मल'

सलाहकार - सुरेश खाडवेंकर (नई दिल्ली), राव बिजेन्द्र सिंह (हरियाणा), डॉ.राजलक्ष्मी शिवहरे (जबलपुर), प्रमिला राउत (नागपुर), पं. रमेश कुमार व्यास शास्त्री (भोपाल), उमेश कुमार पाठक (सौरो,उप्र), विजय कुमार विश्वकर्मा 'पांचालरत्न', श्रीमती आशा शर्मा व श्रीमती राजकुमारी चौकसे (भोपाल)

स्वामी,मुद्रक-प्रकाशक-संपादक-कैलाश श्रीवास्तव'आदमी' (9424443401/7697477067) द्वारा निर्दलीस प्रेस, भोपाल से मुद्रित, राघव भवन सी 6/72 दयालपुर), दिल्ली 110 090 से प्रकाशित। मूल्य 10 रुपये/ विशेषांक 50/- वार्षिक 600/- (डाक व्यय सहित)।

(**RNI regn. DELHI/**2006/19211) ईमेल nirdaliyadaily@gmail.com ई पेपर nirdaliya.com

भोपाल कार्यालय/संपर्क: निर्दलीय प्रकाशन-एफ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२०१६ दूरसंपर्क०७५५-२७७२४०६

प्रवासी भारतीय लेखकों का अवदान

मुझे सदैव यह जानकर अतीव प्रसन्नता या खुशी का अनुभव होता है कि भारत के बाहर जो प्रवासी भारतीय निवास करते हैं वे जिस देश में रहते हैं उस देश की परंपराओं, भाषा और संस्कृति को आत्मसात करने में पीछे नहीं रहते किंतु भारतीय परंपराओं, भाषा और संस्कृति का भी परित्याग नहीं करते। भारत के पहले प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरु जब किसी अन्य देश में जाते थे तो प्रवासी भारतीयों के बीच जाकर स्वयं को गौरवांवित महसूस करते थे। कुछ अपवादों को छोड़कर उनके बाद हुए सभी प्रधानमंत्री इसी परंपरा को अपनाते रहे। भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति एवं मंत्रिगण भी प्रवासी भारतीयों के बीच जाकर उनसे घुल मिल जाते थे किंतु कभी भी स्थानीय राजनीति में नहीं पड़े। यह परंपरा आज तक जारी है।

इसे अपवाद ही कहा जाएगा कि जिन दिनों अमेरिका में राष्ट्रपति पद पर विराजित डोनाल्ड ट्रम्प की तूती बोलती थी तब हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री उनसे इतना अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने अमरीका प्रवास के दौरान भारत मूल के लोगों से चुनाव में रिपब्लिक पार्टी को समर्थन देने की अपील कर डाली। हो सकता है कि ट्रम्प की भारत यात्रा के दौरान मोदी जी उनके द्वारा भारत की नीतियों की प्रशंसा किए जाने का बदला चुकाना चाहते हों किंतु एक गलत परंपरा का सूत्रपात तो हो ही गया। यह बात अलग है कि मोदी जी की अपील का अमरीकी मतदाताओं पर प्रभाव नहीं पड़ा और ट्रम्प को पराजय का सामना करना पड़ा। मेरा व्यक्तिगत मत है कि भारत ने विदेश नीति के मामले में सदैव निष्पक्षता और निगुर्टता को तरजीह दी उसे बरकारार रखा जाना चाहिए। श्री मोदी ने यूक्रेन-रूस युद्ध के दौरान निष्पक्ष नीति अपनाई जिससे स्पष्ट हो गया कि उन्होंने अपनी भूल सुधार ली है।

भारत सरकार का संस्कृति मंत्रालय प्रतिवर्ष प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन करता है। वर्ष २०२३ के प्रारंभ में इस बार इस दिवस के उपलक्ष्य में मध्यप्रदेश की वाणिज्यिक राजधानी के रूप में ख्यात इंदौर नगर का चयन किया जाकर वहा तीन दिवसीय प्रवासी भारतीय सम्मेलन आयोजित किया गया तथा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने प्रवासी भारतीयों के बीच जाकर प्रवासी भारतीयों को विदेशों में भारत के राष्ट्रदूत की संज्ञा दी तथा यह भी कहा कि उनकी नजर में पूरा विश्व ही स्वदेश है। सम्मेलन में राष्ट्रपति द्रोपद्री मुर्मू ने भी भाग लिया वही गुआना एवं सूर्यनाम के राष्ट्र प्रमुखों ने भी उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन किया। बांग्लादेश, पनामा, गवोन, मारीशस, सुडान, अमेरिका, जापान,

इजराइल, कानाडा, थाईलैंड, सिंगापुर, घाना, मलावी आदि देशों के मंत्री या दूत सम्मेलन में मौजूद रहे। इंदौर में तीन हजार से अधिक प्रवासी भारतीयों की उपस्थिति से यह ध्वनित हुआ कि प्रभासी भारतीय भारत के संस्कृतिक और वाणिज्यिक विकास के प्रति संकल्पित है और वे आजादी के अमृतकाल में भारत की प्रगति में विश्वसनीय भागीदार बनने के प्रबल आकांक्षी है।

इंदौर में विगत ८ से १० जनवरी तक हुए प्रवासी भारतीय सम्मेलन के अवसर पर हमने अपनी अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका 'निर्दलीय' का दिसंबर माह का जो विशेषांक न्यूजीलैंड निवासी डॉ. सुनीता शर्मा के सहयोग से निकाला उसका हमे अच्छा प्रतिसाद मिला। संबंधित विशेषांक में हमने डॉ. सुनीता शर्मा की कविताओं एवं आलेखों के साथ ही नाईजीरिया निवास शशि महाजन का 'अफ्रीका में हिन्दी की विषम स्थिति' शीर्षक से आलेख प्रकाशित किया जिसे समुचित सराहना मिली। इसी तरह अर्चना पेन्यूली के प्रवासी कथाकार श्रृंखलांर्गत देश -विदेश की पृष्ठभूमि पर लिखी गई चौदह कहानियों के अनुपमेय संग्रह को भी पाठकों ने अत्यंत ज्ञानवर्धक बताते हुए बधाइयां दीं। देहरादून निवासी सुधा थपलियाल ने इसकी सारगर्भित समीक्षा की । इसी तरह अन्य प्रवासी सृजनधार्मियों में रूपा सचदेव का आलेख 'जीना इसी का नाम है' को पाठकों ने मुक्त कंठ से सराहा। यह आलेख रूपा जी की न्यूजीलैंड यात्रा पर आधारित है। सिडनी (आस्ट्रेलियां) में दो दशक से रह रही रेखा राजवंशी की लघुकथा 'छोटे की माँ' तथा न्यूजीलैंड में दस वर्षों तक रेडियो के समाचार विभाग की अनुभवी प्रस्तोता होने के साथ ही इंडोनेशियाई भाषा और माओरी भाषाओं की लोककथाओं के अनुवाद हेतु चर्चित प्रीता व्यास के आलेख 'काफी: स्वाद से कला तक' को भी पाठकों ने सुस्वाद ग्रहण किया। प्रीता तीन साल इंडोनेशिया में रह चुकी हैं।

सिडनी में स्वतंत्र लेखन कर रही डॉ. भावना कुंवर की गजलों को पाठकों ने सराहा वहीं केलिफोर्निया की साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों से लंबे समय से जुड़ी रही प्रो. नीलू गुप्ता विद्यालंकार और रीना सिंहा की कविताओं को भी सराहना मिली। सिंगापुर निवासी डॉ. अंकुर गुप्ता और केलिफोर्निया की रचना श्रीवास्तव की रचनाओं ने पाठकों ने लुभाया। रचना जी दो दशक से स्वतंत्र पत्रकारिता कर रही हैं। कविता आयरलैंड के अध्यक्ष एवं पत्रकार अभिषेक त्रिपाठी, फिजी निवासी सुएता दत्त चौधरी मेलवार्न (आस्ट्रेलिया) निवासी इला प्रसाद और सिंगापुर निवासी आराधना श्रीवास्तव की कविताओं पर भी पाठकों की अनुकूल प्रतिक्रियायें हासिल हुई। न्यूजीलैंड की दुआ प्रोमिला तो सीधे निर्दलीय प्रकाशन से जुड़ गई हैं तथा उनकी रचनाओं का प्रकाशन ' दैनिक निर्दलीय' में भी हुआ है। लंदन निवासी दिव्या माथुर का आलेख 'विचार के लिए समय दें' सर्वाधिक सराहा गया। नेपाल निवासी अमृता अग्रवाल और कुवैत निवासी रजत कुमार से हमारी साहित्य संपादक सरिता गर्ग 'सरि' ने साक्षात्कार लेकर उन्हें अपनी धारदार कलम से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जिसे पाठकों की प्रशंसा मिलना ही थी, सो मिली है। विशेषांक की प्रस्तुति का केन्द्र रही डॉ. सुनीता शर्मा ने भी लिखा- सबसे पहले तो आप बहुत-बहुत बधाई के पात्र हैं कि आपने इतना अच्छा अंक निकाला है, आपके परिश्रम आपके जज्बे को सलाम। अब हमारी यह 'निर्दलीय पत्रिका' अंतर्राष्ट्रीय नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय बन गई है। इस तरह कुल मिलाकर प्रवासी भारतीय विशेषांक से हमारा भी उत्साहवर्धन हुआ। यही कारण है कि हम उन रचनाकारों की रचनाएं भी जनवरी विशेषांक में प्रकाशित कर रहे हैं जिनका समय व स्थानाभाव के कारण पूर्वांक में नहीं ले पाए थे। ऐसे रचनाकारों में केलिफोर्निया की प्रिया भारद्वाज भी हैं जिनकी रचनाएं विलम्ब से प्राप्त हुई किंतु जनवरी विशेषांक में समावेश किया गया है। कुल मिलाकर प्रवासी भारतीयों का विदेशों में वहां की संस्कृति, भाषा और परंपराओं के संवंर्धन में इतना अधिक योगदान रहा है कि इसे चन्द शब्दों में बाधना अत्यंत दुस्साध्य कार्य है क्योंकि उनका योगदान और अवदान न केवल विदेशों में प्रवास करते हुए भी बल्कि भारत की संस्कृति, भाषा और परंपराओं के संवर्धन और संरक्षण में भी अतुलनीय हिस्सेदारी रही है।

- कैलाश आदमी
प्रधान संपादक

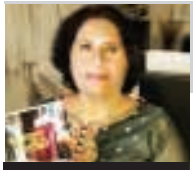

डॉ. सुनीता शर्मा

दो शब्द घटनाओं से सीख

ऐसी कितनी हुई घटनाएँ हैं जिनको याद करके ही कभी रोमांच हो आता है, कभी मन श्रद्धा से भर जाता है तो कभी न्यूज़ीलैंड के प्रति आदर का भाव जाग जाता है। यह घटना उन्हीं दिनों की है जब अपनी बेटी का एडमिशन कराने के लिए मुझे स्कूल जाना था। यहां पर जो स्कूल होते हैं वह जोन के हिसाब से होते हैं.. और वहां एडमिशन दिया जाता है। अपनी बच्ची के सारे सर्टिफिकेट लेकर हम स्कूल पहुंचे। बहुत ही भव्य स्कूल, मन में एक उठकंठा व खुशी। बच्चों को इधर उधर जाते हुए भी देख रहे थे। हाल में जाकर हमने इनफॉर्म किया कि हमें प्रिंसिपल से मिलना है। वहां पर एक व्यक्ति थे जो कि कुछ कागजों की फोटो कॉपी कर रहे थे। उन्होंने कहा- कुछ समय आप वेट कीजिए। उन्हें देखकर मुझे लगा कि शायद कोई अटेंडेंट है जो कि वहां पर कार्य कर रहे हैं..!

हम सब बैठे हुए थे और आपस में बात कर रहे हैं थे.. जब उन महोदय का काम खत्म हो गया तो उन्होंने हमारे पास आकर पूछा-आप बताइए मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूं। उन्हें अटेंडेंट समझ कर मैंने दोबारा से कहा कि हमें प्रिंसिपल से मिलना है ताकि हम अपनी बेटी का एडमिशन करा सके तो उन्होंने बहुत ही विनम्र स्वर में कहा-मैं ही प्रिंसिपल हूं बताइए.. मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूं! मन एकदम सदभाव व श्रद्धा से उनके प्रति भर गया। मन में कहीं इंडिया के प्रिंसिपल की छवि सामने आ रही थी जिनके ऑफिस में आप ऐसे तो जा भी नहीं सकते। उनका एक अलग ही अपना रुतबा, रोब और ऐसा प्रदर्शन होता है जिसको देखकर कभी-कभी आप काँप भी जाते हैं।

यह क्या यहाँ ऐसे प्रिंसिपल है जो कि खुद पेपर फोटो कॉपी कर रहे हैं। यह नहीं है कि वह अपने असिस्टेंट को या ऐसे चपरासी को कह दे कि यह पेपर फोटो कॉपी कर लाए। सबसे अच्छी बात जो न्यूजीलैंड की है वह यही है कि यहां पर डिग्निटी ऑफ लेबर है। एक तो कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं है, दूसरा अपना काम स्वयं कर के लोग अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं।

प्रिंसिपल ने बहुत ही सहृदय से हमारी सहायता करते हुए सारे पेपर वगैरह लिए। जो कमियां थी उनको बताते हुए साथ के साथ ही बेटी का एडमिशन तत्काल कर दिया। यह नहीं कि अभी यह पेपर लाना है वह पेपर लाना है, इस तरह से करो, ऐसा नहीं कि चक्कर पर चक्कर लगवाने हैं। यही बात मैंने यहां के बैंक वगैरह के लिए भी नोटिस की। शुरू शुरू में खाता खुलवाने में इंडिया में कितनी मशक्कत करनी पड़ती है । पर यहां पर अगर आपका आईडेंटिटी प्रूफ है तो आप कहीं भी जाकर अपना खाता खुलवा सकते हैं और फोन पर इतनी आसानी से हो जाता है कि आपको कहीं जाने की जरूरत भी नहीं पड़ती है। ना तो बिजली का बिल, न पानी का बिल..लेकर जाना पड़ता है। खैर यह तो आजकल भारत में भी हो गया है। हम भारत के वातावरण में पले हैं तो हमारी आदतें भी उसी तरह की थी।

यहाँ पर मैं एक घटना और आपके साथ जोड़ना चाहूंगी। पता नहीं कैसे हमारे खून में यह बसा हुआ है- नियम और कानून तो तोड़ने के लिए ही बने हैं। बात उन दिनों की है जब मैं गाड़ी चलाना सीख रही थी.. यहां पर सब लोग नियम और कानूनों के इतने पक्के होते हैं.. साथ में पुलिस की मदद करना अपना फर्ज समझते हैं! अपने इंस्ट्रक्टर के साथ करीबन आधा घंटे की क्लास लेने के बाद उसने मुझे विदा किया। ना जाने क्यों ऐसा मन में आया कि अब तो मुझे गाड़ी चलानी आ गई है तो क्यों ना मैं उसके बिना भी एक दो चक्कर और लगा सकती हूं और अपनी प्रैक्टिस कर लूँ। पहला चक्कर बहुत अच्छी तरह से लग गया जिसमें मेरा कॉन्फिडेंस और बढ़ गई।

दूसरा राउंड मैं ले रही थी.. इंटरसेक्शन पर खड़ी हुई गाड़ियों के निकलने का इंतजार कर रही थी। नई ड्राइवर होने के कारण कॉन्सीयस तो थी ही.. इसलिए शायद ज्यादा समय लग रहा था.. कि पीछे से दूसरे व्यक्ति ने हॉर्न दिया। यहाँ रहने के बाद इतना तो जान चुकी थी कि हॉर्न देने का मतलब यह है कि दूसरा व्यक्ति आपको यहाँ गाली दे रहा है। आप लोगों को यह जानकर हैरानी होगी कि यहां पर ड्राइविंग बिना होर्न के होती है। और हॉर्न देने का मतलब यह है कि दूसरा व्यक्ति आपसे बहुत ज्यादा असंतुष्ट है। इसी हड़बड़ी में जल्दी से गाड़ी निकालने के चक्कर में वहीं साइड में खड़ी एक गाड़ी में मेरी गाड़ी लग गई..! नई ड्राइवर होने से कुछ आता भी नहीं था। गाड़ी तो मैंने साइड में लगा दी थी, वही लेडी जिसने मुझे हॉर्न दिया था,उसने फोन करके पुलिस को बुला लिया.. मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था.. मैं बहुत ज्यादा घबरा गई थी। पुलिस भी आ गई। किसी तरह से मैंने अपना होशो हवास संभालते हुए घर की ओर जाना शुरू किया जो पास ही था। पतिदेव घर में ही थे। उनको बताया कि गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया है। वैसे तो मेरी हालत देखकर वह सारा मामला पहले ही समझ गए थे। मैंने कहा-कोई बात नहीं,मैं जा कर देखता हूं। सबसे पहले पुलिस ऑफिसर ने मेरे पति से यही पूछा-क्या ड्राइवर

ठीक है? पतिदेव ने कहा- हां थोड़ा घबरा गई है वैसे ठीक है। पुलिस ऑफिसर ने कहा कि मुझे उनसे बात करनी पड़ेगी। पतिदेव उनको घर ले आए.. क्योंकि मेरे पास लाइसेंस नहीं था। यह बहुत बड़ा ओफेन्स है और दूसरा आप बिना इंस्ट्रक्टर के गाड़ी नहीं चला सकते। लर्निंग लाइसेंस पर आपके साथ कोई ना कोई बैठा हुआ होना चाहिए। और फिर एक्सीडेंट भी कर दिया। पतिदेव बात को संभालने की कोशिश कर रहे थे और अभी तक हमें इंडिया के नियमों कानूनों के अनुसार यह लगता था कि शायद यहां पर भी हम किसी ना किसी तरीके से अपनी बात मनवा सकते हैं तो पतिदेव ने उनसे भारतीय लहजे में कहा कि कुछ हो सकता है..? ऑफिसर ने बात को ज्यादा तवज्जो न देते हुए अपनी इन्क्वारी जारी रखी। पतिदेव को लगा शायद उन्होंने सुना नहीं.. तो उन्होंने दोबारा अपनी बात कह दी। ऑफिसर अब थोड़ा नाराज होते हुए बोला-प्लीज क्या आप चुप रहेंगे और मुझे अपना काम करने देंगे। अब वह चुप हो गये और समझ गये कि हम इंडिया में नहीं हैं । सबसे अच्छी बात यह थी कि खाली कार ही डैमेज हुई थी किसी को चोट नहीं लगी थी। गाड़ी का इंसोरोन्स होने के कारण हमने दूसरी गाड़ी को रिपेयर कराने की जिम्मेदारी ले ली.. तब पता लगा यहाँ इंसोरेंस कितना जरूरी है। इसीलिए लोगों की सेलरी इंसोरेंस में ही निकलती है पर लर्निंग लाइसेंस और बिना इंस्ट्रक्टर के ड्राइव करने के कारण मुझे कोर्ट में जज के सामने उपस्थित होना पड़ा। जहाँ एक भारी फाइन तो चुकाया ही, भविष्य में ऐसी गलती न करने की शपथ भी लेनी पड़ी, आज जब ड्राइव करती हूं तो बहुत केयरफुल तो रहती ही हूं। अपनी गलती से बहुत कुछ सीखा और वह सीख हमेशा साथ रहती है।

अंतस में आलोड़ित संवेदनाएँ

डॉ कविता सुल्हयान

डॉ सुनीता शर्मा द्वारा लिखा गया काव्य संग्रह 'चिर प्रतीक्षित' जो उन्होंने अपने पति श्याम शर्मा जी को समर्पित किया है, की भूमिका अलका सिन्हा जी ने लिखी है।

''चिर प्रतिक्षित'' की सभी ११७ कविताएं उन संवेदना की जबानी है जो सुनीता जी के अंतस में उमड़ती रही हैं। कविताएं पढ़ते समय ऐसा लगता है कि वे संवेदनाएं व भाव उनके ना रहकर अपितु सभी स्त्री या पाठकों के हो जाते हैं। उनकी कविताओं में ऐसी स्त्री चित्रित हुई है जो अपने इतिहास से सीखती है और अपनी गलतियों को दोबारा दोहराना नहीं चाहती। वह वर्तमान में लड़ती है, हर रंग में रंगना चाहती है, परिस्थिति में ढ़लना चाहती है लेकिन किसी भी बेचारगी से नहीं, बल्कि स्वाभिमान से घर और बाहर दोनों मोर्चों को संभालते हुए संवरना,निखरना और मुस्कुराना चाहती है। उनकी कविताओं में उनके अंतस की स्त्री सावन की रिमझिम बरसात की तरह और तितली की तरह पंख फैलाकर दीवानी होकर नाचना चाहती है। प्रेम का संयोग और वियोग दोनों प्रकार का श्रृंगार उनकी कविताओं में प्रकट होता है ।

जीवन के खालीपन को वह इस तरह पी जाना चाहती हैं जैसे कुछ हुआ ही नहीं । हमसफर के साथ वह पूर्ण समर्पण के साथ ऐसी दुनिया बसाना चाहती हैं जहां स्त्री पुरुष में भेदभाव ना होते हुए समानता हो। कई सर्द रातों में वे अपने प्रेम को तन मन से स्पर्श करने की ख्वाहिश रखती हैं तो कहीं वे इश्क को लगाव से घाव तक की यात्रा में तब्दील कर देती हैं।

शहरों की भागदौड़ में, अज नबीपन में, ऊंची ऊंची इमारतों के बीच खोएपन में उनकी कविता 'संभावना' अभी भी जीने की

नया काव्य संग्रह

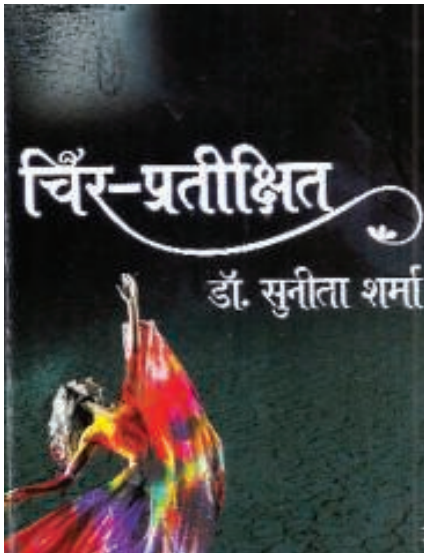

संभावनाएं जगाती है। कहीं वे जीवन साथी से कहती हैं--तुम्हें भी टांगना होगा कहीं अपना गरूर घमंड कोट वाली खूंटी पर, पोंछारती रहूंगी तुम्हारे पांव शुद्ध जल तन मन से।

उनकी कविताओं में पुरुष के प्रति समर्पण तो जगह-जगह दिखाई देता है लेकिन शर्त यह है कि पुरुष को भी अपना अहम,वहम , शिकायतें तोहमतें सब त्यागनी होंगी। पुरुष- स्त्री

समानता के बात जगह-जगह पर उनकी कविताओं में दिखाई देती है। 'मैं हम' जैसी कविताएं उनके व्यक्तिगत अनुभवों को बयान करती दीख पड़ती है। उनके शब्द दिल में अनायास जगह बना लेते हैं जब वे लिखती हैं --आज बारिश अच्छी लगी, पता नहीं खारे आंसू कब मीठे हो गए। उनकी कई कविताएं रूमानियत से भरी हैं जहां वे तन-मन ,आत्मा को प्रेम से सारोबार करना चाहती हैं। उनकी कविताओं में कहीं कुछ छूट जाने का दर्द भी दिखाई देता है जैसे 'मुझे ही पता' कविता में ऐसी ही संवेदना दिखाई देती है--*अब तो यूं कट रही है जिंदगी ऐसे ना ही गुजर रही है , ना ही खत्म हो रही है* लेकिन फिर भी जीवन के प्रति उनकी आशा समाप्त नहीं होती । रिश्तों की सच्चाई को वे चार पंक्तियों में उधेड़ देती हैं--*बिंध बिंध कर छिल गई अंगुलियां अपनी ही, झीने रिश्तों की उघड़ी हुई सच्चाई की करते-करते कहीं तुरपाई*

'ऋण से उऋण' कविता में यशोधरा के मन की गाथा को उन्होंने चित्रित किया है। रोमांटिक होते हुए भी उनकी कविताएं प्रेम के छिछोरेपन को नहीं दर्शाती बल्कि अंतर्मन के प्रेम की बात करती हैं। वे अपने प्रेम को मौखिक रूप से नहीं कहना चाहती बल्कि एहसास करवाना चाहती हैं । 'अंतर्मन' कविता एक मां की अपनी बेटी के प्रति संवेदनाएं हैं जो सहज रूप से पाठक के मन में उतर जाती हैं।

मोम दिल पत्थर सा हो रहा है अब जिंदगी के जख्म खाते-खाते या कर रहे हैं मौत का इंतजार जैसी काव्य पंक्तियां उनके खालीपन और जीवन संघर्ष को खंगालने लगती हैं। लगता है उन्हें भौतिक खुशियों से ज्यादा रूहानी खुशियों की तलाश है। जीवन की कृत्रिमता उन्हें मंजूर नहीं वे कृत्रिमता के इस मुखोटे से बचना चाहती हैं।

'प्रवासी भारतीय तू' कविता में उनका देशप्रेम चित्रित होता है और वे हर प्रवासी भारतीय को संस्कृति और भारतीयता से जुड़ने की सीख देती हैं। 'लम्हा लम्हा' कविता में वे अपने जीवन के अनुभवों का झरोखा दिखाती हैं। कई ऐसी कविताएं भी हैं जहां वे शहर की मशीनी जिंदगी से थक कर गांव की ओर भाग जाना चाहती हैं। 'मां त्यों तटता ताला' कविता में जब भी संदूक में रखे सूखे आंसुओं से भीगे खाली कागज और बिना बुने फंदो की बात करती हैं तो मन में कहीं कुछ रिसने लगता है। हर इंसान मां के सामने बच्चा ही रहना चाहता है। वह भी मां के अलग-अलग रूपों में समा जाना चाहती हैं। उनका दर्द हर स्त्री का दर्द बन जाता है जब वे कहती हैं- 'बेटियों का अपना घर नहीं होता, जानते हुए भी एक मकान को घर बनाने के ही हुनर का रंग'। अपनी मां को कविता समर्पित करते हुए उन्होंने उन्हें आदि अनादि ईश्वर माना है। वे कोरोना से युद्ध करने के लिए स्टे होम ,सेव लाइव्स की गुहार लगाती हैं। कोरोना त्रासदी में काम करने वाले कोरोना योद्धाओं के प्रति भी वह अपनी कविता में कृतज्ञता प्रकट कर अपने कर्तव्य का निर्वाह करती हैं।

संवेदना और भावों के विश्व में विचरण करती सुनीता जी की कविताएं कहीं-कहीं यथार्थ के बीच भी लाकर खड़ा कर देती हैं। स्त्री जीवन के सुख और दुखों के गलियारों से गुजरती हुई उनकी कविताएं प्रत्येक स्त्री के मन के तारों को छेड़ने में सक्षम है और यही एक कवि की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है। काव्य सौंदर्य की दृष्टि से देखें तो सारी कविताएं मुक्तक के रूप में रचित हैं। प्रकृति का साथ सुनीता जी ने कहीं भी नहीं छोड़ा। उद्दीपन ,आलंबन दोनों रूपों में प्रकृति का वर्णन बड़ी सुंदरता से उनकी कविताओं में हुआ है। अपनी संवेदनाओं, सौंदर्य,अंतर्मन, मनोदशा, आशा, निराशा को उन्होंने प्रकृति के संग ऐसा रंग दिया है कि नदी, सागर बादल,झील,ऋतु कुछ उससे अछूते नहीं रहे ।अपनी संवेदनाओं को प्रकृति के साथ जोड़ने का सौंदर्य उनकी कविताओं की खूबी है। उनकी सहज, सरल भाषा पाठक के लिए कविताओं को पढ़ना सुविधाजनक बनाती है। कविताओं में आए अंग्रेजी शब्द प्रसंगानुसार सटीक बैठते हैं, कहीं भी अटपटे नहीं लगते। कहीं-कहीं भाषा में व्यंग भी दिखाई देता है जैसे मेरी किस्मत तो ऑफिस में दबी हुई बिना रिश्वत वाली फाइल जैसी ,जिस पर बाबू की कृपा दृष्टि कभी पड़ी ही नहीं।

कुल मिलाकर सुनीता जी के शब्दों में ही कहूंगी-ना जाने क्यों जिंदगी ने धीमी आंच पर बिठाकर छोड़ दिया तलाशने को, खुद। यह कहकर है हिम्मत तो हीरा बन अपनी संवेदनाओं द्वारा सुनीता जी ने अपने काव्य को इस तरह तराशा है कि जरूर इसकी चमक हर पाठक तक पहुंचेगी। अपने ख्यालों ,ख्वाबों का तिनका चुन-चुन कर काव्य का यह घरौंदा जो इन्होंने बनाया है यह अवश्य ही हर पाठक के मन को अविस्मरणीय अनुभूति प्रदान करेगा।

●

वेलिंगटन में प्रवासी भारतीय दिवस व विश्व हिंदी दिवस

(निर्दलीय के लिए डॉ सुनीता शर्मा)

भारतीय उच्चायोग ने ९ जनवरी को अपने वेलिंगटन परिसर में १७वां प्रवासी भारतीय दिवस मनाया। यह कार्यक्रम ८ जनवरी से भारतीय राज्य मध्य प्रदेश के इंदौर में भारत सरकार द्वारा आयोजित आधिकारिक तीन दिवसीय समारोह के साथ समन्वय किया गया।

इस अवसर पर बोलते हुए, न्यूजीलैंड में भारत के उच्चायुक्त नीता भूषण ने कहा कि १०८ साल पहले महात्मा गांधी की दक्षिण अफ्रीका से भारत वापसी का दिन चिह्नित किया गया था। यह प्रवासी भारतीयों के भारत से जुड़ाव का उत्सव भी है।

उच्चायुक्त ने कहा कि इस वर्ष के सम्मेलन का विषय भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के २०४७ तक एक आत्मानवीर भारत या आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण व प्रवासी भारतीयों की भूमिका और सक्रिय भागीदारी से उपजा है जिसमें इस वर्ष की थीम है प्रवासी भारतीय = अमृत काल में भारत की प्रगति के लिए विश्वसनीय भागीदारिता (

उच्चायुक्त नीता भूषण ने यह भी बताया कि वे जहां भी गई हैं, उन्होंने [प्रवासी] भारतीय संस्कृति, भाषा, लोकाचार, दर्शन और मूल्यों का प्रचार किया है। उच्चायुक्त ने यह कहा कि प्रवासी त्योहारों और कार्यक्रमों में कई [स्थानीय] गणमान्य लोगों को भारतीय कपड़े पहने देखकर उन्हें खुशी होती है।

हम भारतीय कहीं दूसरों को अपनी भाषा व संस्कृति से प्रभावित करते हैं कि हमारे त्योहार, जैसे दीवाली और होली, साथ ही साथ बॉलीवुड फिल्में, भारतीय व्यंजन और कपड़े अन्य राष्ट्रीयताओं के बीच लोकप्रिय हो गए हैं। उच्चायुक्त ने प्रवासी भारतीयों के योगदान और उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने न्यूजीलैंड में विविधता, समावेशन और जातीय समुदायों की मंत्री प्रियंका राधाकृष्णन के कार्यों की प्रशंसा की तथा कहा कि सत्यानंद जी ,जब वह न्यूजीलैंड के गवर्नर जनरल थे उन्हें ९ जनवरी २०११ को नई दिल्ली में प्रवासी भारतीय दिवस पुरस्कार प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। प्रमुख वेलिंगटनियन

नागिनबाई पटेल की सराहना करते हुए उन्होंने बताया कि उनके प्रयासों के कारण ही भारतीय उच्चायोग ने रेलवे स्टेशन के बाहर महात्मा गांधी की मूर्ति लगाने की पहल की। इस प्रकार, वेलिंगटन दुनिया की कई राजधानियों में शामिल हो गया जहां महात्मा और उनके अद्वितीय योगदान का संदर्भ किया जाता है

पिछले पुरस्कार विजेताओं में मंत्री प्रियंका राधाकृष्णन, ऑकलैंड भाव ढिल्लों में भारत के मानद कौंसल, पूर्व सांसद कंवलजीत बख्शी और डनेडिन के पूर्व मेयर सुखी टर्नर शामिल हैं।

उच्चायुक्त ने इंदौर में कार्यक्रम में न्यूजीलैंड प्रवासी युवा प्रतिनिधि सिमरन कौर द्वारा दिए गए भाषण की सराहना भी की।

डॉ. सुनीता शर्मा ने कहा- अंतरराष्ट्रीय मासिक निर्दलीय का प्रवासी भारतीय विशेषांक इस दिशा में हमारा भी एक छोटा सा प्रयास था, जिसमें हमने लगभग बिभिन्न ३० साहित्यकारों को एक मंच पर जोड़ने की कोशिश की।

हिंदी दिवस

भारतीय उच्चायुक्त न्यूजीलैंड के कार्यालय में 10 जनवरी को हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर महामहिम सुश्री नीता भूषण जी ने माननीय प्रधान मंत्री का अभिवादन करते हुए उनका विश्व संदेश पढ़ा द्य हिंदी भाषा व संस्कृति को जीवित रखने की दिशा में न्यूजीलैंड में होने वाली गतिविधियों व प्रयासों की उन्होंने सराहना की तथा उन्होंने हिंदी को निरंतर आगे बढ़ाने का संदेश दिया । इस अवसर पर उन्होंने हिंदी निबंध लेखन / पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा की व बच्चों का अभिनंदन उन्हें पुरस्कार वितरित करके किया। बच्चों ने हिंदी पहेली में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हुए उसका भरपूर आनंद उठाया। उन्होंने कहा मुझे यह बताते हुए बहुत प्रसन्नता व गर्व का अनुभव हो रहा है कि डॉ. सुनीता शर्मा की हिन्दी पुस्तक 'चिर प्रतीक्षित' का लोकार्पण किया गया जिसकी कुछ झलकियां यहाँ प्रस्तुत है-

हिंदी हम सब से है
हम में है हिंदी
इसके शब्दों में है वह बानगी
हैं विज्ञान से सूक्ष्म कहीं तो
बांधे ऊंचे पर्वतों-शिखरों की ऊंचाई
नापे कहीं ऐसे अथाह-समुद्र की गहराई
मेरी मीठी हिंदी इंटेनेट पर कहीं
दस लाख करोड़ पन्ने पाकर इतराई
सात साल में
९४ प्रश वृद्धि पाकर मुस्काई
मन सुनकर होता खुश कहीं
दुनिया में दस अखबार पढ़ने की
शीर्षष्ठ गिनती में छ हैं हिंदी भाषी..
यही नहीं हम जाने यह भी
हिंदी है पढ़ाई जाती
२६० विदेश विश्व विद्यालयों में कहीं
तो २८ हजार शिक्षण विद्यालयों में भी
सिखाई जाती हमारी हिंदी प्यारी ..
हिंदी है यूँ विश्वव्यापी
हमारे मान सम्मान को बढ़ाती
शाश्वत-कालजई प्राणवायु सी
अभिव्यक्ति के विशाल पटल पर
विश्व सेतु का मुकाम पाती हिंदी
अभिव्यँजाओं के पग-प्रगति
नित नया निर्माण करती हिंदी
तभी तो विश्व के माथे पर बिंदी
सी सजी मेरी प्यारी सी हिंदी

-ऑकलैंड (न्यूज़ीलैंड)

डॉ. सुनीता शर्मा की कविताएँ - एक दृष्टि

डॉ. देवेंद्र तोमर

साठोत्तरी कविता जिस तेवर और जिस कलेवर के साथ पाठकों के सामने आयी उसने तमाम सारी धारणाओं- अवधारणाओं को तो खंडित किया ही, साथ ही अनेक प्रकार के सिद्धांतों और अनेक प्रकार की मान्यताओं को स्थापित भी किया। ऐसा करते हुए साठोत्तरी कविता जिसे नामकरण के स्तर पर अनेक नामों से पुकारा गया, पाठकों के साथ-साथ श्रोताओं के बीच और दोनों के साथ साथ अंतिम रूप से साहित्य में अपनी पहचान स्थापित करने में सफल रही है। साठोत्तरी कविता को इस मुकाम तक पहुंचाने में जिनका योगदान रहा है उनमें एक नाम डॉ. सुनीता शर्मा का भी है।

डॉ. सुनीता शर्मा मूल रूप से दिल्ली (भारत) की रहने वाली हैं, मगर पिछले बीस वर्षों से ऑकलैंड (न्यूजीलैंड) में रहकर वहाँ की सरकार, वहाँ के समाज और वहाँ के शिक्षा जगत को अपनी शैक्षणिक सेवाएँ दे रही हैं।

डॉ. सुनीता शर्मा को कविता के संस्कार जन्म से मिले हैं। उनके पिता श्री राजपाल शर्मा स्वयं हिंदी प्राध्यापक और पाँचवें-छठे दशक के समर्थ और सक्रिय रचनाकार रहे हैं, मगर जन्मजात संस्कारों के साथ-साथ डॉ. सुनीता शर्मा ने परिवेश की दृष्टि से दुनिया का एक बहुत बड़ा भूभाग देखा है, वहाँ की स्थितियों-परिस्थितियों को जाना-समझा है। खास बात यह है कि इन स्थितियों-परिस्थितियों के बीच भी डॉ सुनीता शर्मा की दृष्टि स्त्री विमर्श पर केंद्रित होकर रही है। शायद इसलिए भी कि वे स्वयं एक स्त्री हैं और उससे अधिक इसलिए भी कि डॉ. सुनीता शर्मा ने रूढ़िवादी स्त्रियों से लेकर प्रगतिशील और आधुनिक स्त्रियों तक स्त्रियों के कई वर्गों को देखा है। इतना ही नहीं इन भिन्न-भिन्न प्रकार की स्त्रियों के प्रति समाज का अलग-अलग रवैया भी डॉ. सुनीता शर्मा की दृष्टि में आता रहा है।

स्त्री सहानुभूति संवेदना से लेकर स्त्री प्रगति और विकास तक की इस मानसिक और भावनात्मक यात्रा में डॉ. सुनीता शर्मा स्वयं स्त्री होकर विचरण करती रही हैं या कहें कि स्त्री जीवन की लहरों के साथ अठखेलियाँ करती हुई विचारों के गहरे सागर में डूबती उतराती रही हैं। इस सबके साथ और इस सबके बीच डॉ. सुनीता शर्मा का रचनाकार अपने सृजन के माध्यम से जो कुछ भी कह पाया वह समय-समय पर प्रकाशन और प्रसारण की शक्ल में आपके सामने आता रहा है।

आज मेरे सामने डॉ सुनीता शर्मा के दो काव्य संग्रह 'चिर-प्रतीक्षित' और 'अनछुए स्पर्श' पठन-पाठन और कथित समीक्षा के लिए प्रस्तुत हैं।

आइए सबसे पहले बात करते हैं डॉ. सुनीता शर्मा के काव्य संग्रह 'चिर- प्रतीक्षित' की जो बुक्स क्लीनिक पब्लिशिंग छत्तीसगढ़ इंडिया से प्रकाशित है। कृति का प्रकाशन वर्ष २०२२ में हुआ है।

चिर-प्रतीक्षित के प्रारंभ में पहले पृष्ठ पर डॉ सुनीता शर्मा ने अपने पति श्री श्याम शर्मा को कृति समर्पित वक्तव्य दिया है, जो अत्यंत भावनात्मक होने के साथ-साथ वैचारिक और तर्कसंगत भी है। इसके बाद के पृष्ठों पर अलका सिन्हा की बेहद खूबसूरत भूमिका है। सच कहूँ तो इस भूमिका को पढ़ने के बाद समीक्षा के नाम पर कुछ कहने के लिए रह नहीं जाता। इसके बावजूद मुझे अपने दायित्व का निर्वहन करना है, क्योंकि भविष्य में कभी किसी माध्यम से मानदेय भुगतान की स्थिति बनी तो कम से कम मेरा दावा सुरक्षित रहेगा।

भूमिका समाप्त होते ही अगले पृष्ठ पर एक कथन है- इश्क क्या किया आँखों से पन्नों तक उतर आया...! यह कथन ही इस कृति के कलेवर का संकेत देता है। आगे बढ़ें तो आप पाएंगे कि अनुक्रमणिका में

११७ कविताओं के शीर्षक की सूची है। कविताओं के शीर्षक भी पाठक को आकर्षित करते हैं।

संग्रह की पहली कविता 'सरल पज्ज़ल' कवयित्री के दृढ़ संकल्प की उद्घोषणा है, जिसमें वो कहती है - जियूँगी...लड़ूँगी... उड़ूंगी/यह सब यूँ ही कर जाऊंगी.....

अगली कविता 'दीवानी सी' का एक नमूना देखिए- *एक औरत जो दफन बरसों से/उसने न जाने कैसे-कैसे/साँसों के आरोह-अवरोह में/कहीं सपने चुनने-बुनने/आरंभ कर दिए हैं.....*

ये कविताएँ, ऐसी कविताएं हैं, जिसमें कवयित्री अपने इरादे साफ करती है, बहुत कुछ कहने के इरादे, बहुत कुछ बताने के इरादे।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। प्रत्येक युग और प्रत्येक युग के प्रत्येक दौर में समाज की स्थिति-परिस्थिति को केंद्र में रखकर साहित्य का सृजन किया जाता रहा है। बीते दिनों कोरोना का काल भी इससे अछूता नहीं रहा है। ऐसी कविताएँ समकालीन कविताए और बाद में तत्कालीन कविताए कही जाती हैं। इन्हीं कविताओं में कुछ कविताए होती हैं, जो अपने कथ्य और शिल्प के कारण कालजायी कविताएं बन जाती हैं। काव्य संग्रह की कविता 'युद्ध' इसी प्रकार की कविता है। यह कविता कोरोना काल की स्थितियों-परिस्थितियों को केंद्र में रखकर लिखी गई है। यह कविता अपने कथ्य और शिल्प की बेहतरी के कारण कालजयी कविता बन गई है। भविष्य में जब भी साहित्य के भीतर कोरोना काल की चर्चा होगी, तब तब डॉ सुनीता शर्मा की इस सृजनात्मक दृष्टि को चर्चा में जरूर लाया जाएगा।

डॉ सुनीता शर्मा की वैसे तो सभी कविताएं सार्थक हैं, लेकिन आपकी कोई कोई कविता सार्थकता का पर्याय बन गई है। संयोगवश कविता का शीर्षक भी सार्थकता है। मैं बहुत सोच रहा हूँ कि नियंत्रण में रहूँ और समीक्षक होते होते पाठक या प्रशंसक भर होकर ना रह जाऊं, मगर दिल है कि मानता नहीं।

डॉ सुनीता शर्मा की कविता सार्थकता पढ़ते हुए मेरी दृष्टि कविता की एक-एक पंक्ति और एक-एक पंक्ति के एक-एक शब्द पर ठहर रही है। मेरा विश्वास है आपके साथ भी ऐसा ही होगा। आप तो इस कविता के तेवर देखिए - *समुद्र ने धीरे से कहा/आँखों के कान में/बस अब और नहीं/इससे और ज्यादा खारा/मैं/अब और नहीं हो सकता!/जवाब/आँख ने धीरे से आँख उठाई/फिर झुकाई-बोली/जैसा आप कहें/धीरे खुद से बुदबुदाई/नहीं और नहीं/बस एक कतरा भी नहीं/फिर हौले से मुस्कुरायी/आँखों में ही पी गई/जैसे समुद्र/एक पल को आंख मूंद ली/फिर यूँ आँखें खोलीं/जैसे कुछ हुआ ही नहीं/जैसे कुछ हुआ ही नहीं/.....!*

प्राचीन कवियों में एक कवि हुए हैं केशव! केशव को कठिन काव्य का प्रेत कहा गया है। मुझे लगता है कि ऐसा कहने में कहने वाले ने थोड़ी जल्दबाजी कर दी। सच पूछें तो केशव का यही वैशिष्ठ उन्हें महाकवि बनाता है। केशव जैसी संवाद योजना शायद सूर और तुलसी भी नहीं प्रस्तुत कर सके, बाद के कवियों की तो बात छोड़िए। रावण के दरबार में अंगद और हनुमान की उपस्थिति और इन दोनों का रावण के साथ परिचयात्मक तथा उद्देश्य पूर्ण संवाद जो केशव ने अपनी रचनाओं में लिखा है, उसे हम छात्र जीवन में तब के पाठ्यक्रम की किताबों में पढ़ते रहते थे। मेरे जैसे पढ़ाई चोर विद्यार्थी का पढ़ाई में मन लगने का अगर कोई सबसे बड़ा कारण था तो केशव की वही रचनाएं थीं। आज डॉक्टर सुनीता शर्मा की इस कविता को पढ़ते हुए आंशिक रूप से ही सही पर शैली के स्तर पर मुझे केशव की याद आ गई।

चिर प्रतीक्षित में छोटी-बड़ी सभी कविताएं मिलती हैं, मगर हर कविता का अपना एक मजा है, अपना एक आनंद है। हर कविता की अपनी एक देह है, हर कविता का अपना एक लिवास है। आगे की कविताओं में चाहे वह 'मेरी चुप्पी' शीर्षक की कविता हो चाहे 'ज्यों ही तुम' शीर्षक की कविता हो या फिर कुरुक्षेत्र, कैसा है यह राज, अंतर्मन, बसंत, इस बार, पानी की प्यास, हम कहाँ हैं, मुखौटा, मैंने क्यों बनाया, दिल की दौलत, उम्र भर, बीत गई, वक्त वक्त की बात, वो मुस्कुराना, रिहाई, शिकायत या फिर टुकड़ा एहसास, एक से एक बढ़कर कविताएं हैं जो बेहतर कविताएं कही जा सकती हैं। कहीं-कहीं तो बेजोड़ हैं।

उल्लेखनीय बात यह हैं कि डॉ सुनीता शर्मा की सभी कविताओं में स्त्री अपने संपूर्ण सौंदर्य के साथ प्रकट होती है। उनकी कविताओं में सौंदर्य के साथ-साथ स्त्री का आत्मविश्वास देखने को मिलता है।

इतना ही नहीं उनकी कविताएं स्त्री के शाश्वत रूप में पवित्र होने का प्रमाण देती हैं ।

कविताओं में स्त्री के विविध रूप पूरी जिम्मेदारी और गंभीरता के साथ देखने को मिलते हैं। चिर-प्रतीक्षित काव्य संग्रह डॉ. सुनीता शर्मा की कविताओं का संग्रह भर नहीं है, वस्तुतः यह रंग-बिरंगे फूलों का एक गुलदस्ता है इस गुलदस्ते में ऐसे फूल भी हैं, जिनकी कोंपलें अभी निकली हैं और ऐसे फूल भी है जो अपनी गंध और अपने रूप के यौवन पर हैं। इन बहुरंगी और बहु मिजाजी फूलों में एक माली की हैसियत से डॉ. सुनीता शर्मा का व्यक्तित्व पाठक- श्रोता के सामने निखर कर आता है जिसके लिए रचनाकार ना केवल बधाई की पात्र हैं, बल्कि उनका अभिनंदन किया जाना चाहिए। मेरा विश्वास है कि आने वाले समय में चिर- प्रतीक्षित काव्य संग्रह साहित्य जगत में अपनी एक विशिष्ट पहचान स्थापित करेगा।

इसी क्रम में आइए बात करते हैं, डॉ सुनीता शर्मा के ही एक दूसरे कविता संग्रह 'अनछुए स्पर्श' की। इसका प्रकाशन भी वर्ष २०२२ में बुक्स क्लीनिक पब्लिशिंग से हुआ है।

कविता संग्रह की भूमिका श्री नरेश शांडिल्य नई दिल्ली ने लिखी है। अपनी भूमिका में सारांश रूप से उन्होंने डॉ सुनीता शर्मा की कविताओं को प्रेम और विरह की सहज अभिव्यक्ति निरूपित किया है।

इसी क्रम में प्रस्तावना के पृष्ठ पर श्रीमती रति चौबे, डॉ सुनीता शर्मा के कविता संग्रह अनछुए स्पर्श के संबंध में लिखती हैं - कवयित्री का हर अंदाज निराला है। एक बार तो मुझे लगा कि श्रीमती रति चौबे ने मेरा यह डायलॉग चुरा लिया है। श्रीमती रति चौबे का यह मूल्यांकन उनका अपना मूल्यांकन है, जो यथार्थ के एकदम निकट है और हम सब इससे सहमत हैं, कम से कम मैं तो पूरी तरह सहमत हूँ।

अगले पृष्ठ पर डॉ सुनीता शर्मा का यह काव्य संग्रह माँ को समर्पित किया गया है, जो आवश्यक होकर अत्यंत सुखद है। काव्य संग्रह में १०७ रचनाएं संग्रहित हैं।

आइए देखते हैं इन रचनाओं को..... संग्रह की पहली रचना का शीर्षक है -'अच्छा लगता है'..... निसंदेह प्रेम करते हुए और प्रेम की अभिव्यक्ति करते हुए अच्छा लगता ही है। इसी प्रकार संग्रह में खुशी शीर्षक की कविता भले ही छोटी सी कविता है मगर अच्छी कविता है। इसी संग्रह की एक कविता 'न जुड़कर भी' बेहद खूबसूरत कविता है। इस कविता की कुछ पंक्तियां देखिए-*तुमने कहा था/आँख भर कर/देख लिया करो/आजकल आँखें तो/भर भर आती हैं/छलकती रहती हैं/तुम क्यों नजर नहीं आते/धुंधली सी तुम्हारी/क्यों तस्वीर बन जाती है/.....* इस कविता की सभी पंक्तियां बहुत कुछ कहने के लिए छटपटाती हैं। कल सुबह, आजादी, बंजारन, जैसी कविताएं भी अच्छी कविताएं हैं, जिनमें रचनाकार बहुत कुछ कहने की कोशिश करता है, जिसमें वह सफल भी होता है। इसी क्रम की एक कविता है 'दर्पण को'..... यह कविता बहुत छोटी सी कविता है लेकिन कथ्य और शिल्प के धरातल पर इस कविता का विस्तार देखिए- *यूँ तो है वाकिफ वह/सारी हकीकतों से/पर उनके मन का तिमिर/सच्चाई से उन्हें यूं/डराने लगा है/कि पसंद आने लगे हैं उन्हें अब/लोगों के मुखोटे चढ़े चेहरे/लगता है अब दर्पणों/को भी आईना दिखाने/का वक्त आ गया है/...*

इसी प्रकार ए जिंदगी शीर्षक की कविता छोटी सी कविता होने के बावजूद बड़ी बात कहने में कामयाब होती दिखाई देती है- *कारोबार सा दिन/कहीं*

एक बदमिजाज/शाम चुरा लूं/बुरा न माने ए जिंदगी/तो तुझे चाय पर बुला लूं/सिर झुका कर मानती हूँ/तो तू इतराती है/चल आ/तेरे कड़वे सफर की बात/नजरे मिला तुझसे करूं/तमाशा ए जिंदगी तुझसे/हंस कर दो दो हाथ में करूं/.... संग्रह की आईना शीर्षक जैसी कविताएं प्रयोगवादी कविताएं हैं प्रतीकों के माध्यम से रचनाकार अपनी बात को उत्कृष्ट तरीके से कहने में कामयाब रहा है। लक्ष्यगत जिंदगी को सफलतापूर्वक जीने का सबसे बड़ा फंडा यही है कि आशावादी होकर रहा जाए। यही आशावाद डॉ सुनीता शर्मा की कविताओं में सर्वत्र बिखरा हुआ पड़ा है।

इस संग्रह की एक कविता है, 'कभी तो होगी'। कुछ पंक्तियां देखिए- *कोशिश भी है/ उम्मीद भी है/रास्ता भी मिल ही जाएगा/क्योंकि मुझे पता है/तुम मेरे नसीब में हो/आज होठों पर शिकायत भी है/मगर फिर भी ऐ जिंदगी/तुमसे तो मोहब्बत ही है/इसीलिए सोचती हूं/कभी तो तू मेरी भी होगी/*

रचनाकार का यही आशावादी दृष्टिकोण उसके सृजन के केंद्र में जगह-जगह दिखाई पड़ता है। इस स्वभाव की कविताओं के साथ आगे बढ़ती हुई संग्रह की अन्य कविताएं कथ्य और शिल्प के स्तर पर खूबसूरत कविताएं हैं फिर चाहे वह कस्तूरी मृग हो या अधूरापन या तलबगार।

सभी कविताओं में कुछ ना कुछ बल्कि बहुत कुछ कहने की कोशिश की गई है और वह कोशिश सफलता को स्पर्श करती है। संग्रह की शीर्षक कविता मैं चिर प्रतीक्षित भाव और कला के दृष्टिकोण से बेजोड़ कविता है। यह कविता थोड़ी लंबी जरूर है मगर जितना कुछ इस कविता में कहा गया है उतना कहने के लिए इस कविता का इतना बड़ा होना लाजिमी था। बल्कि मैं तो यह भी कहूंगा कि यह रचनाकार का काव्य कौशल है जो उन्होंने लंबी दिखने वाली इस कविता में बड़े विस्तार से अपनी बात कही है, जो कविता की इतनी लंबाई के बिना असंभव थी।

स्त्री मन की भिन्न-भिन्न दशा-मनोदशाओं का चित्रण डॉ सुनीता शर्मा की कविताओं में जगह- जगह देखने को मिलता है, मगर यह कविता अपने आप में विषयांतर्गत केंद्रीय कविता है। इस कविता में स्त्री का संपूर्ण जीवन दर्शन और उसके अपने पक्ष में उत्पन्न स्थितियों का चित्रण बड़ी ही सूक्ष्मता और गहराई से देखा जा सकता है।

यद्यपि इस कविता के बाद अनेक कविताएं तो बेजोड़ कविताएं हैं और पाठक के मन में यह बात आ सकती है कि इस कविता का शीर्षक इस काव्य संग्रह का शीर्षक क्यों नहीं बना। लेकिन अंततः मुझे लगता है कि कवयित्री का निर्णय सर्वथा उचित ही रहा है। चलो प्रिय पैदल, तू क्यों, कैसे खेलूं में फाग, वह मेरे, रूठे हुए लम्हें, धूल, जीवन कुम्हार, मेरी कमजोरी, अच्छा है, दीदार ए हसरत, लगता है, दुआ, ऐसे मत आया करो, अल्फाज, जिंदगी बन जाती है, न ऐसे छोड़ो, पारदर्शी आंसू, चलो सब, या खुदा, नजर, जिंदगी, जिंदगी से रिहाई, भूख आदि शीर्षक की कविताएं ऐसी ही कविताएं हैं, जो छोटी-बड़ी कविताएं हैं मगर छोटा होने के बावजूद बहुत कुछ कहती हुई कविताएं हैं और बड़ी होने के बावजूद अच्छी लगने वाली कविताएं हैं। इस संग्रह की कविताओं की भाषा सरल है, सहज है। मौलिक प्रतीकों के साथ कही गई बात पाठक को प्रभावित और आकर्षित करती है।

जीवन में सुख और दुख का आना और जाना प्राकृतिक नियम के अनुरूप और स्वाभाविक है। मगर रचनाकार को एक आम आदमी से अलग हटकर और बड़ा इसीलिए माना जाता है कि रचनाकार दुख और सुख की उन परिस्थितियों के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। जीवन के उतार-चढ़ावों की स्थितियों के बीच जिजीविषा पैदा करता है। रचनाकार के इसी कौशल से एक बहुत बड़ा समाज प्रभावित होता है और जीवन के प्रति आस्थावान होता है।

डॉ सुनीता शर्मा की कविताएं यह सब कुछ करने में कामयाब होती दिखाई देने वाली कविताएं हैं। इस प्रकार 'अनछुए स्पश' एक बेहतर का भी संग्रह है। मेरा विश्वास है कि यह काव्य संग्रह अपने कथ्य और शिल्प के कारण साहित्य जगत में सम्मानित होगा।

डॉ सुनीता शर्मा के दोनों ही कविता संग्रह न केवल पठनीय हैं बल्कि संग्रहणीय भी हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि डॉक्टर सुनीता शर्मा का नियमित लेखन सुव्यवस्थित रुप से जारी है।

(समीक्षक विश्व साहित्य सेवा संस्थान अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं-सं.)

मुझे मर जाने दो

शशि महाजन

दरवाजे में घुसते ही रश्मि ने आंख चुरा ली और सीधे अपने कमरे की तरफ बढ़ गई। कमरे में पहुंचते ही उसने धड़ाम से दरवाजा बंद कर दिया। विद्या को आजकल उसका यह नया व्यवहार समझ नहीं आ रहा। उसकी इतना हंसने गाने वाली बेटी अपने में खोती जा रही है। न ठीक से खाना खाती है , न सोती है। पूरा पूरा दिन भूखी प्यासी रहेगी और रात को अचानक उठकर इतना खायेगी कि लगेगा जैसे पूरी वानरसेना ने हमला कर दिया हो। टोको तो भभकती आँखों से देखेगी।

विद्या ने इस समस्या के बारे में अपनी सहेलियों से बात करी तो सबने यही कहा- अरे पंद्रह साल की लड़की ज्वालामुखी होती है , उसे अपनी माँ अच्छी नहीं लगती , वह पहचान के संकट (आइडेंटिटी क्राइसिस) से गुजर रही होती है , इसलिए फिक्र मत करो। एक दो साल में खुद ही ठीक हो जायगी ।

विद्या ने अपने पति रमेश से कहा- क्यों नहीं तुम उससे बात करते।

रमेश जैसे ही रश्मि के कमरे में घुसा , तो रश्मि ने छूटते ही कहा- मम्मी ने भेजा है आपको रमेश यह सुनकर थोड़ा सकपका गया। यह देखकर रश्मि जोर से खिलखिलाकर हंस दी। रमेश भी सहज हो गया और आकर उसकी बगल में बैठ गया। बोला-तो क्या बात है , क्या परेशानी है ?

कुछ नहीं , आपकी बीवी हमेशा अपनी हाँकती है।

छी, ऐसे नहीं कहते अपनी माँ के बारे में , वो प्यार करती हैं तुमसे।

हुं।... और रश्मि चुप हो गई। रमेश भी थोड़ी देर इधर उधर की बातें करके उठ गया।

दिन ऐसे ही बीतने लगे, जब रश्मि का मूड अच्छा होता सब ठीक लगता , और जब उसका मूड खराब होता वह अपने कमरे में बंद हो जाती। और विद्या बाहर परेशांन बैठी रहती।

एक दिन जब विद्या से यह बर्दाश्त नहीं हुआ तो उसने उठकर रश्मि के कमरे का दरवाजा खोल दिया। देखा तो वह मेज के नीचे बैठी है।

अरे, यहां अँधेरे में क्यों बैठी है ? कुछ देर बाहर जाकर सहेलियों से मिल आ। रश्मि ने आंख उठाकर मां को देखा तो विद्या को लगा, यह तो गीली हैं।

क्या बात है बच्चे ? विद्या ने उसे बाँहों में भरते हुआ कहा। विद्या के पुचकारने की देर थी कि रश्मि फूटफूटकर रोने लगी।

रो क्यों रही हो बताओ तो , किसने कुछ कहा क्या ?

नहीं , आप बहुत अच्छे हो मैं अच्छी नहीं हूँ।

विद्या परेशान हो गई , पर रश्मि ने कुछ कहा ही नहीं बस रोती रही।

अब विद्या और रमेश रश्मि की भावनाओं को लेकर बहुत सजग रहने लगे। कहीं तो इस उदासी का ओरछोर मिले।

शाला में वार्षिक उत्सव (एनुअल डे) का फंक्शन होना था। रश्मि ने किसी भी कार्यक्रम में भाग लेने से मना कर दिया। विद्या ने कारण पूछा तो कहा- देखो मेरी तरफ , इतनी बड़ी पकोड़े जैसी नाक है , फटी फटी आँखें हैं , स्टेज पर जाऊंगी तो सब हसेंगे मुझ पर।

यह क्या कह रही हो तुम ?

हाँ , मुझे मालूम है , तुम कहोगी कि मैं बहुत सुन्दर हूँ।

हाँ , बिलकुल तुम वाकई बहुत सुन्दर हो।

तुम माँ हो तुम तो ऐसे कहोगी ही , पर बाकी के लोग ऐसा नहीं सोचते । मोटी भैंस पैदा की है तुमने।

अब तुम मोटी कहाँ से हो गई , तुम्हारा वजन तो अभी बढ़ना चाहिए।

हाँ हाँ रहने दो , मुझे तुम्हारे जैसा नहीं बनना।

मेरे जैसा ?

और नहीं तो क्या , एक हस्बैंड मिल गया , जो आगे पीछे घूमता है , सारा दिन बैठी रहती हो , कुछ नहीं करती। कितनी मोटी हो तुम।

विद्या की इस अपमान से आँखें भर आई, परन्तु रश्मि ने उसे तिरस्कार पूर्वक देखा और कमरे में चली गई।

मध्यावधि परिणाम (मिडटर्म के रिजल्ट्स) आ गए थे , परन्तु रश्मि ने घर में नहीं बताया था। एक शाम विद्या शाम के वक्त पार्क में घूम रही थी कि उसने दूर से रश्मि की सहेली सिमी को आते देखा(विद्या ने दूर से हाथ हिलाया तो वह उसके पास आ गई। नमस्ते आंटी , अब रश्मि कैसी है ? रश्मि तो ठीक है, उसे क्या हुआ है?

अच्छा , फिर स्कूल क्यों नहीं आ रही? विद्या का माथा ठनका , वह चलने लगी तो सिमी ने कहा- एक बात और आंटी , मिडटर्म में रश्मि के मार्क्स बहुत कम आये हैं , इसलिए उसने आपको रिजल्ट्स नहीं दिखाए हैं । विद्या के कदमों के नीचे से जमीन खिसकने लगी। उसने किसी तरह उसे बाय कहा और घर आ गई। घर पहुंची तो रमेश और रश्मि दोनों टी . वी पर ' फ्रेंड्स ' देखकर खुश हो रहे थे।

उसका उदास चेहरा देखकर रमेश ने पूछा , क्या हुआ ?

विद्या ने एकबार रश्मि को देखा और फिर रमेश से कहा , तुम जरा चलो मेरे साथ बैडरूम में तुमसे बात करनी है। यहाँ क्यों नहीं , जरूर मेरे बारे में है। रश्मि ने चैलेंज देते हुए कहा अपने गुस्से को काबू करते हुए , विद्या ने कहा- अगर तुम्हे पता है तुम्हारे बारे में है , तो तुम बता क्यों नहीं देती , क्या प्रॉब्लम है ?रश्मि जोर जोर से रोने लगी। मुझे मर....

-नाइजीरिया

डॉ अनिता कपूर की दो रचनाएं

प्रवास में हिन्दी

मैं वर्षों सर्द रही
अलास्का की बर्फ धीरे-धीरे
मेरे अंदर जमने लगी थी
पर मुझे तो दौड़ना था
उधार के शब्दों से मुझे
कोई रचना नहीं रचनी थी
कुछ समय तक मैं कछुआ बन गई थी
परंतु आँखें..
खोल से बाहर ही छोड़ दी थी
एक दिन हवाओं से भाषा की बात चली
महसूस हुआ मुझे,
मानों प्रवासी हवाओं के
हिन्दी के दांत उग आयें है
हवा से झरते हुए शब्दों का बना बिछौना
हिन्दी का एक नया विश्वकोश तैयार हुआ है
जमे हुए पानी को हिला
शब्दों को चुन मात्राओं से संवार
भाषा ने करवट बदली है
मेरे विदेशी मित्र जब
मुझसे हिन्दी में बात करते हैं तो
मुझे आनंदित करती है भाषा की महक
आसमान में दिखता है
शब्दों का चमकीला इंद्रधनुष
मानों प्रवास में मेरा नया जन्म हुआ है
प्रवास में मुझे हिन्दी नृत्य करती हुई
एक अप्सरा सी दिखती है
उस सोच की जन्मदात्री
जिसने प्रवासी पेन से महाकाव्य रचा है
अपने इस नए जन्म रूपी कबूतर को
भाषा का चुग्गा खिलाकर
अमावस की रात पर और
पूनम के गोल चाँद पर
हिन्दी की कोंपलें रोपनी हैं
कुछ नए मुहावरे व प्रवासी स्वच्छंदता
शब्दों के भीतर छुपकर
एक नया हस्ताक्षर लिखना है
मेरी रचनाओं में मेरी भाषा में
जहां न हो खदानों का अंधेरा
स्वदेश से लाई मेरी हिन्दी की बिंदी
प्रवास के मस्तक पर दिखे
प्रवासी अकेलेपन का व्याकरण
और नियति का यायावर होना
निरन्तरता में विदेशी मुस्कानों को
अपना बना ही लिया
आज जब मेरी अमेरीकी सहेली
मेरे घर आती है
भारतीय परिधान में बिंदी लगा कर
नमस्ते करती है
तो मेरी रूह पर
फूल खिल-खिल आते हैं
प्रवास बसंती हो जाता है
मैं द्विज हो जाती हूँ
द्विज..
वह जो दो बार जन्म लेता है।

खिड़की

मेरे घर की यह खिड़की.....
मुझे बहुत प्यारी लगती है.....
इस खिड़की की एक विशेषता
इसमे एक अदृश्य दूरबीन जड़ी है
जो संवेदनाओं से बनी है
यह करवा देती है भौगोलिक सैर
नैहर से संदेश लाये
नाई सी लगती है मेरे घर की यह खिड़की
मुझे मेरे मायका जैसी लगती हैं
मेरे घर की यह खिड़की.....
आज भी गीली है इसकी लकड़ी.....
मैंने कल ही निर्भया को रोते देखा
इसी दूरबीन ने दो बच्चियों को
दरख्त से झूलते देखा
और भी बहुत कुछ होते देखा
अपने मन को शर्मसार भी होते देखा.....
यहाँ सुबह की अख़बार तो नहीं मिलती
मेरे अलादीन का चिराग
बिन कहे ही मेरी पीड़ा समझता है
और मेरी दूरबीन के लेंस को हमेशा
चमका कर रखता है.....
सुनते थे तालिबानी मेरे घर से दूर हैं
पर आज मेरे घर की इस खिड़की ने
उन्हे अपने देश के राज्यों में
घुसते देखा है
दूरबीन ने बलात्कारियों को भी
शहर-शहर में सूंघते देखा है
कल दूरबीन थोड़ी सी हंसी थी
शायद बोलने भी लगी थी
या न्याय करने वाले के कान
खुलने लगे हैं
क्या सच में हवा में
प्रदूषण कण कम हुए हैं....
दूरबीन के काँच को पहली बार
सुबह उजली सी लगी है.....
मेरे घर की खिड़की प्रवासी तो है
पर बंदनवार, तोरण, झालर देशी है
इसीलिए तो हमेशा
गीली ही रहती है इसकी लकड़ी
देश से आए बादलों का पर्दा जो है

(कैलिफोर्निया, अमेरिका)

अवलम्ब

इला प्रसाद

सूखती झाड़ी के तिनके
का अवलम्ब
चाँद ने लिया
या पुनर्जीवन की चाह में
सूख कर तिनका हुई
इस डाल ने
शरद पूर्णिमा के
चाँद को
कौन जाने !
प्रकृति के
अंश दोनों
प्रेम में तो
दरस का
परस भी
होता बहुत है !

(ह्यूस्टन , अमेरिका)

विश्व हिंदी दिवस पर सुनीता शर्मा ने प्रवासी भारतीय दिवस की विशिष्टता प्रतिपादित की

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर यहाँ आकलैंड के भारतीय समाज द्वारा आयोजित बच्चों के ग्रीष्मकालीन शिविर में जाना हुआ।भारतीय समाज दशकों से समाज सेवा कर रहा है और साप्ताहांत में हिंदी विद्यालय का भी संचालन करता है। यहाँ भारतीय समाज के प्रधान जीत जी, शिक्षण की अध्यक्षा रूपा सचदेव इस तरह के आयोजन करते ही रहते हैं। इस अवसर पर नई दिल्ली से प्रकाशित अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका 'निर्दलीय' की प्रवासी संपादिका डॉ सुनीता शर्मा ने बच्चों के साथ प्रवासी भारतीय दिवस की विशिष्टता व महत्व बच्चों को बताया। सबसे रुचिकर वह कार्यक्रम रहा जिसमें माओरी लोक कथा मोई ने सूरज को कैसे धीमा किया। मायोरी लोककथा का नायक मोई सूर्य को धीमी गति से चलने के लिए विवश करता है द्य वह अपने भाइयों के साथ फ्लेक्स की रस्सीयाँ तैयार करके

अपने पूर्वजों के द्वारा प्राप्त जादुई जबड़े की हड्डी द्वारा सूर्य की नाक पर प्रहार कर सूर्य को धीमी गति से चलने के लिए विवश करते हैं। सूर्य की तेज गति को रोक वह प्रसन्न होते हैं कि लोग बाग अब अपने दिन के कार्य सुचारु रूप से कर सकते हैं । यह चर्चा करते हुए बच्चों को अपनी

भारतीय संस्कृति से जोड़ा गया.. बच्चों ने खुद ही अणवेषक की तरह इस कथा के नायक को हमारे हनुमान जी जोड़ते हुए कहा कि सबसे शक्तिशाली व हमारे सबसे बड़े सुपर हीरो हैं और उन्होंने मोई (माओरी नायक) हनुमान जी (भारतीय संस्कृति) व सूर्य के चित्र बनाएं।इस अवसर पर उन्हें प्रवासी भारतीय विशेषांक जो कि निर्दलीय द्वारा प्रकाशित किया गया वह भी दिखाया गया। बच्चों में इस विशेषांक को लेकर विशिष्ट उत्साह दिखाई दिया। बच्चोँ ने लेखन के प्रति भी विशेष रुचि दिखाई । इस अवसर पर श्रीमती सुनीता शर्मा ने विश्व हिंदी दिवस की महत्ता के विषय में बताया ।

बच्चोँ ने हिंदी कविताएं, गीत और कथा-कहानी सुना कर भाग लिया ।

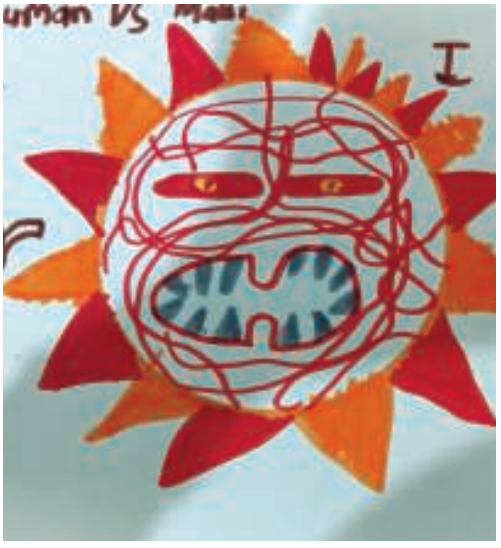

गज़ल
-सोम नाथ गुप्ता रायकोटी

यह बंदिशें यह पाबंदियाँ हटा दो यारो
क्या ग़लत है मेरा सलीक़ा बता दो यारो

क्यों ढूँढता रहूँ इक रिश्ता मैं ताउम्र
मुझे खुद से इश्क़ है सबको बता दो यारो

कहने को बसते हैं इंसाँ इस नगरी में
लेकिन मुझे कोई तो मिला दो यारो

आशिक़ी का दम भरते हैं यहाँ बहुत
पर मुझे एक फ़रहाद तो मिला दो यारो

अभी तो होश में हूँ कुछ कह नहीं पाता
दर्दे हिज्र कह पाऊँ थोड़ी पिला दो यारो

मेरे अहसासों की क़ीमत न लगा पाओगे
मेरे जिस्म को चाहे नीलाम करवा दो यारो

ग़र है खुदाई एक तो फ़िरक़े अलग क्यों हैं
'दीवाना' नासमझ है कोई तो समझा दो।

-आकलैंड, न्यूज़ीलैंड

परिचय

पूरा नाम-सोम नाथ गुप्ता
उपनाम-दीवाना रायकोटी
जन्म स्थान-रायकोट, पंजाब, भारत
जन्म तिथि- 22 मई 1944
वर्तमान निवास- आकलैंड, न्यूज़ीलैंड
हिन्दी(उर्दू) और पंजाबी कविता, ग़ज़ल लिखने का शौक़ चढ़ती उम्र के साथ लग गया था जो कि अभी भी चल रहा है। दो कवि संग्रहप्रकाशित हो चुके हैं। न्यूज़ीलैंड के उच्च स्तरीय कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ का सौभाग्य मिलता रहता है। यहाँ के स्थानीय एवं आनलाइन पत्र और पत्रिकाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

आंसू है दवा
-प्रगीत कुँअर

उनके मन में है जो बेबाक़ कहे जाते हैं
और हम भी उन्हें चुपचाप सुने जाते हैं।
उनको मालूम है ये बात बहुत अच्छे से
किस तरह और के जज़्बात छुए जाते हैं।
सोच ये पेड़ को फिर बोझ से झुकना ना पड़े
फल ही खुद पेड़ से चुपचाप गिरे जाते हैं।
जब से मालूम हुआ हमको कि आँसू है दवा
जख्म आँसू से ही हर बार सिए जाते हैं।
ये तजुर्बा भी मेरा और के काम आ जाए
दिल ने जो भी कहा कागज़ पे लिखे जाते हैं।

कल पे भरोसा नही

ग़लत बात की पैरवी कर रहे हैं
उन्हें लग रहा है सही कर रहे हैं।
बचा है चुकाने को क़र्ज़ा दुखों का
बयाँ अपने खाता-बही कर रहे हैं।
थी उम्मीद जिनसे बुझाएँगे आकर
वहीं आग में और घी कर रहे हैं।
जो सूरज से ना जल सकें चाँद-तारे
तो दर्पण वो बन रोशनी कर रहे हैं।
वो बातें सुनी-अनसुनी कर रहे हैं
बिना बात की सनसनी कर रहे हैं।
हमें कल पे ज़्यादा भरोसा नहीं है
जो करना है कल वो अभी कर रहे हैं।

परिचय

पूरा नाम- प्रगीत कुँअर
पिता- डा0 कुँअर बेचैन
जन्म-ग़ाजियाबाद
वर्तमान निवास-ऑस्ट्रेलिया
(सिडनी)
शिक्ष- बी0 कॉम, चार्टर्ड एकाउंटेंट, कॉस्ट एकाउंटेंट, एल0 एल0 बी0
प्रकाशित पुस्तक- देखें थे जो ख़्वाब (दोहा संग्रह)
प्रकाशन- दोहों के साथ-साथ, हाइकु,ताँका, गीत,गज़ल,माहिया,कहानी और लघुकथा लेखन जिनका प्रकाशन समय-समय पर विभिन्नस्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में और साझा संकलनों में होता रहा है।
अन्य- देश-विदेश के विभिन्न रेडियो और टी0 वी0 चैनलों पर काव्य पाठ एवं साक्षात्कार।
संप्रति- आस्ट्रेलियन कम्पनी में निदेशक एकाउंट्स एवं फ़ाइनेंस।

मैं प्रवासी
वैशाली रस्तौगी

मैं प्रवासी,मैं प्रवासी
किंतु मैं भारत की वासी
होता आसान नही,
प्रवासी बनकर रहना
बहुत कुछ पड़ता है सहना
कभी जानकर,
अंजान सा रहना।
कभी अपनों के लिए तरसना।
मैं प्रवासी!,मैं प्रवासी!

किंतु मैं भारत की वासी।
बिन अपनों के खुशी उदासी।
जानती हूं,प्रवासियों की वेदना को
तड़पती हैं सांसें,
अपनों से मिलने को
हर क्षण मन असमंजस में होता है
सबकी खैरियत जानकर ही सोता है।
रात में जब कभी घनघनाता है फोन
मेरे मन में बन जाते हैं
अनेक त्रिकोण
आशंकाओं से घिर जाता है मन
सुनने से पहले,करता है प्रभु मनन
मैं प्रवासी,मैं प्रवासी

किंतु मैं भारत की वासी
मेरे वतन तुझे,
क्षण भर भी ना भूल सकूं
तन मेरा हो कहीं,
पर मन तुझमें ही रखूं।
पीड़ा हमारी कोई क्या जाने।
हम जानें या रब जाने।
गुज़ारिश यही है
हमवतनों से,
प्रवासी जाने पर
मेहमान न माने।
मैं प्रवासी! मैं प्रवासी!
किंतु मैं भारत की वासी।

-जकार्ता

नई सरहद का अनुभव

डॉ. अनिता कपूर

अपने अमेरीका में विगत वर्षों में प्रवासकाल के दौरान हुए एक खास अविस्मरणीय अनुभव को आपसे सांझा करने से पहले एक बात बताना चाहूंगी कि वर्ल्ड गिविंग इंडैक्स के मुताबिक कि अमरीकियों का स्थान दुनिया में पहला है।

ऐसी कितनी ही बातें हैं, जो अमेरिकी मानसिकता को भारतीयों से भिन्न बनाती हैं। ज्यादातर भारतीयों की तरह वे मेहनती होते हैं पर आसान रास्ता नहीं अपनाते। नए आईडियाज़ नई सोच डैवलप करने, नई सोच सामने रखने या फिर चीजों को नए तरीके से करने का प्रयास करने में अमेरिकी नहीं हिचकते और अक्सर परिणाम आश्चर्यजनक निकलते हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि अमेरिका में आज जिन्हें श्वेत या व्हाइट अमेरिकन कहा जाता है वो अमेरिका के मूल निवासी नहीं हैं। अमेरिका के मूल निवासियों को अमेरिकन इंडियन्स या रेड इंडियन्स कहा जाता है। वर्षों पूर्व पहले फ्रांस फिर ब्रिटेन के लोग (अंग्रेज़ लोग) वहाँ बसने आयें और यहीं रह गए। वोही स्थानीय अमेरीकन कहलाते हैं।

काम के प्रति उन का जनून और सकारात्मक प्रवृत्ति देखते ही बनता है। साथ ही आम धारणाओं के विपरीत अमेरिकी लोग स्वभाव से काफी विनम्र होते हैं लेकिन कोशिश करें कि आप उनसे कोई व्यक्तिगत सवाल न पूछें।

जब तक आप उनके साथ या वो आपके साथ बेहद सहज न हों, तब तक आप उनके साथ प्रोफेशनल रवैया अपनाए रखें और बेवजह ही अगर उनके साथ कोई बात शेयर करेंगे तो मिश्रित प्रतिक्रिया आपको मिल सकती है और स्थानीय अमेरिकियों की यही बात से मैं अवगत थी। इसीलिए अपने पड़ोसी निकोल पीटरसन से इसी सोच की पटरी पर चलते हुए हाय-हैलो तक ही सीमित रही। हाँ कभी लिफ्ट में या कार पार्किंग में एक साथ आमना सामना हो गया तो हमारी बातचीत का अगला पड़ाव होता था। उस दिन का मौसम या कुछ और सहज और पर्सनल हुए तो आज क्या खाया। इसके आगे और व्यक्तिगत न हो इसके लिए अमेरिकी लोग आपको मौका ही नहीं देते...इसी के चलते मुझे भी अब सरहद में रहना आ गया था।

चूंकि मैं अकेली रहती हूँ यह वे जानती थी और मुझे हमेशा कहती थी कि कभी भी किसी चीज की जरूरत हो तो अवश्य बताना....और मैं मन ही मन उसके अनकहे को समझ हँसती थी....जैसे वो कह रही हो कि हाँ, सिर्फ खास एमरजेंसी में ही बताना, पर वैसे अपनी सरहद में ही रहना। यहाँ के स्थानीय लोग रिश्तों में करीबी होने पर भी ज्यादा व्यक्तिगत नहीं होते, और हम भारतीय...हमें तो पहली मुलाक़ात में ही सामने वाले की पूरी जन्म-कुंडली जब तक खंगाल न लें तब तक मुलाक़ात अधूरी सी लगती है और फिर अगली मुलाक़ात में और जानने हेतु सवालों की लिस्ट भी मन ही मन तैयार होने लगती है। खैर, मैं अपने उस अनुभव को आपसे पहले बाँट लूँ जिसमे मेरा दिल छू लिया और मुझे पुनर्जन्म मिला। कुछ दिन से मैं काफी बीमार सा, थका सा कमजोर महसूस तो कर रही थी, पर हालत ऐसी हो जाएगी...सोचा न था। सुबह से बेहद चक्कर आ रहें थे साथ ही छाती में भारीपन था। अपने देसी टोटके सारे आज़मा चुकी थी, पर हालत सुधरने का नाम नहीं ले रही थी....सब देवी-देवताओं को भी याद कर चुकी थी। अपनी एक दो सहेलियों को भी फोन मिलाये फिर अपनी बिल्डिंग के ऑफिस में भी फोन किया कि शायद कोई फोन उठा लें, तो अपनी स्थिति से अवगत कराऊँ, शायद कोई सहायता आ जाए। पर उस दिन तो जैसे शनि की साढ़ेसाती ही लगी हुई थी। हर फोन सिर्फ वॉइसमेल पर ही जा रहा था। जैसे-तैसे खुद को सम्हालने की कोशिश में यह याद ही नहीं रहा कि एम्बुलेंस बुला सकती थी। एक अनजाने भय के कारण और पराये देश में अंतिम समय आने जैसे खौफ़ में, दिमाग और सोच ने काम करना ही बंद कर दिया था। इसी बीच अचानक साथ वाले अपार्टमेंट का दरवाजा खुला तो यकायक निकोल पीटरसन की याद आई, सोचा इसी से बात करती हूँ। पर अगले ही क्षण लगा कि यह तो सिर्फ हाय-हैलो ही करना जानते हैं, बस उतने तक ही सीमित रिश्ता रखते है यह मेरी क्या मदद करेगी। काश कोई अपना भारतीय

होता यहाँ। उस पूरी बिल्डिंग में कोई भी भारतीय परिवार नहीं रहता था....थे तो बस स्थानीय, एशियन और मेक्सिकन लोग। अब तक मुझे साक्षात काल सामने दिखने लगा था....पर मन को समझाया कि अरे यमलोक तो हमारे शास्त्रों और धर्म में बताया गया है....यहाँ अमेरिका में, इनका भी तो कोई मृत्युलोक होगा ही और वहाँ के यम को शायद मुझ पर तरस आ जाए क्योंकि मैं भी अमेरीकन सिटिज़न हूँ न। और अगर वो मुझे इस धरती पर और कुछ जीवन दान देना चाहे तो यकीनन मेरी गोरी पड़ोसन के दिल में मेरे पुकारने पर सरहद के पार भेज ही देगा।

और ऐसा ही हुआ। जैसे ही मैंने गिरते पड़ते अपना दरवाजा खोल बाहर झाँका तो निकोल को बाहर खड़े देखा और तुरंत बिना हैलो किए सीधा उससे मेडिकल मदद के लिए पुकारा। तब तक मेरी सोचने समझने की शक्ति जवाब दे चुकी थी...मैं सिर्फ उस सरहद की लकीर को ही देख पा रही थी कि वो उसे पार करेगी या नहीं। और मैं बेहोश हो गयी। अगले दिन जब आँखें खुली तो स्वयं को अस्पताल के बिस्तर पर पाया। अभी डॉक्टर से पूछ ही रही थी- मुझे यहाँ कौन लाया और मुझे क्या हुआ....इतने में निकोल को अस्पताल के कमरे के दरवाजे से अंदर आते हुए देखा उसके हाथ में जूस भी था। और इधर मेरे आँखों में बहते आंसुओं ने उसे बिना कुछ बोले ही कृतज्ञता के भाव दिखा दिये थे। निकोल ने तुरंत नजदीक आ कर मेरे हाथों को सहलाया और सांत्वना दी। उसके हाथों में मेरे घर की चाबियाँ भी थी। उसने बताया कि कैसे तुरंत मेरे बेहोश होने के बाद उसने तुरंत अस्पताल से एम्बुलेंस बुलाई और इसी समय दौड़ कर मेरे बेडरूम में जा कर मेरे बैग से घर की चाबियाँ और मेरा पर्स निकाला...जरूरत की दो-चार वस्तुएँ इकट्ठा कर मेरे साथ अपनी कार में एम्बुलेंस के साथ-साथ यहाँ आ कर सारी औपचारिकता पूरी कर मुझे एड्मिट कराया। डॉक्टर के हाथ सौंप कर अपने पति को फोन कर हालत बताए और पति को घर जा कर बच्चों को खाना दें उनका खयाल रखने को कह दिया। मैं निकोल की इस आकस्मिक पर अनुभवी दक्षता को आँखों में अश्रु लिए निहारती ही रह गयी... और उन दिन पहली बार उसके परिवार और बच्चों के बारे में जाना तो सरहद की लकीर मिटने लगी....मुझे महसूस हुआ, मेरी अकस्मात बीमारी ने एल ओ सी, की लकीर को हल्का करने में खूब रोल निभाया हो। मुझे अपनी बीमार हालत से जैसे प्यार होने लगा था। मुझे एक सप्ताह अस्पताल में रहना पड़ा। इस बीच निकोल बराबर प्रतिदिन मेरा हाल-चाल पूछने आती रही। अस्पताल से छुट्टी होने पर जब मैं घर वापस पहुंची, तो अंदर घुसते ही मेज पर मेरे पूरे आठ दिनों की डाक पड़ी दिखी। मेरी आँखों में सवाल देख निकोल ने तुरंत बताया कि मेरे चाबी के गुच्छे में लेटर-बॉक्स की चाबी देख वो रोज़ डाक निकलती रही थी। वो जानती थी हमारे लेटर- बॉक्स अनुपात में छोटे हैं और दो-तीन में खाली करने ही पड़ते हैं। वरना उसके भरे होने पर, डाकिया फिर उसमे और डाक नहीं डाल पाने के कारण डाक बाहर ही रख जाता है। उसकी इस सोच के पार मुझे सिर्फ मनुष्यता ही दिख रही थी, न की अमेरिकी और भारतीय होने का अंतर। पर यहाँ यह तो कहना ही होगा कि अगर, कोई मेरा अपना भी इस समय यहाँ होता तो यह सब इतनी दक्षता से न कर पाता। घर आने पर मुझे पूरी तरह से स्वस्थ होने में पंद्रह दिन लग गए। इन पंद्रह दिनों में निकोल लगातार मेरे खाने पीने, मेरी डाक और दवाइयों का बराबर खयाल रखती रही। धीरे-धीरे बिल्डिंग के बाकी निवासी जो एशिया और मेक्सिकन मूल के थे, पर अब तो वे भी स्थानीय निवासियों की श्रेणी में आते थे, जिनमे से कुछ ग्रीन-कार्ड होल्डर और कुछ अमेरीकन सिटिज़न बन चुके थे....मिलने आते रहे...पर निकोल उन्हे भी मेरे पास ज्यादा देर बैठने और बोलने नहीं देती थी...अब वो मेरी सरहद के अंदर आ चुकी थी।

मेरे स्वस्थ होने तक मैं इसी गुमान में रही की सरहदें मिल चुकी हैं....पर मैं यहाँ भारतीय होने के कारण बहुत संवेदनशील हो, गलत सोच बैठी थी। जैसे ही निकोल ने महसूस किया कि मैं अब स्वस्थ हो कर अपनी पुरानी दिनचर्या में लौट रही हूँ...वैसे-वैसे ही उसकी तरफ की सरहद की धुंधलाई रेखा वापस अपने रूप-रंग में लौटने लगी थी। सरहद की लकीर के उस गहरे होते हुए रंग को मैं अपने अंदर वापस समाहित कर दोबारा ही पहले वाली निकोल को देखने चाहती थी और उस पुराने हाय-हैलो तक सीमित वाली अपनी पहचान को पुनर्जीवित रखने की चाहत में, एक मानसिक यंत्रणा से गुज़र रही थी...जिसका अहसास निकोल तक नहीं पहुँच रहा था। कहीं पढ़ा था कि अपेक्षा दुख-तकलीफ की जननी है पर हम भारतीय बस ऐसे ही होते हैं न। पहले बार एक नए मजबूत एहसास के साथ रिश्तों के बारे में, एक नए दृष्टिकोण से यह सीखा कि.....अकेलेपन के साथी, उन तमाम बिना सरहदों वाले रिश्तों से तो, यह सरहद वाले रिश्ते ही बेहतर है। जिन्हे अमेरिका के स्थानीय निवासी खूब निभाना जानते हैं।

(कैलिफोर्निया)

डॉ. सुनीता शर्मा की रचनाएं

एक मुलाकात

आंसुओं को भाता नहीं
बहना आंखों के रस्ते ..!
आँखों से बादलों को पानी
देना है अब जरूरी ..!
बन गईं कलम क्यूँ अब ऐसी
फ़टे पन्ने फिर भी खुद यूँ उतरती
शब्दों की भ्रूण हत्या करके भी
क्यूँ यह सुनामी सी बहती ..
एक मुलाकात खुद से खुद की
एक यात्रा बाहर से भीतर
लगता अब है जरूरी ..

देती रहीं रोशनी

चांद हमारी नींद चुरा कर कहीं
तारों को ख्वाब दिखाता रहा यूँ हीं..!
ख्वाहिशों की चांदनी में ऐसे ही
एहसासों की गठरी भीगती रही..!
आ यादें ज़ख्म यूँ सहलाती रहीं
जैसे रूह दिल में उतरती हुई
रात भर कहीं देती रहीं रोशनी ..!

खुद मैंने

जिंदगी की धूप से, चांद पाने के लिए
कुछ तजुर्बे यूँ भी किए खुद मैंने..!
खुद को ही अपने सिर की गठरी में
बांध लिया यूँ कहीं ,खुद मैंने !
पढ़ी किताबें, काम आई कहां,
दर्द ज़ख्म आंसू-सुनामी से,
पर रोका यूँ कहीं,खुद मैंने!
दर्द भरे सूखे होठों पर
अनकही नमी से
नमकीन बूंदें सजा ली कहीं यूँ
खुद मैंने..!
कर्म-इबादत समझा,जमीं पर रखूं
कैसे खुरदरी-हथेलियों में बसाया
कहीं यूँ ,खुद मैंने !
मन-कसकता रहा कहीं
घर की तलाश में
खानाबदोश-जीवन जीया कहीं यूँ
खुद मैंने!
सड़क, ठोकर,गम सह पत्थर-सा-मैं,
तराशने में खुद को लग गये बरसों
जैसे चाह-आह-वाह-अनुभव-
खुददारी-होसलें
किस्से गढ़े अपने ही कहीं यूँ
खुद मैंने!
हो जीवन-रंगारंग-त्यौहार जैसे
या संजीवन-मिलन-चाँदनी रात ऐसे
जिंदगी तेरी जीत का हर जश्न
तुझे हँस कर देकर सांसें खुद की,
तुझसे इश्क निभाया कहीं यूँ
खुद मैंने..!

बादल से तुम

मैं अपनी तलाश में खुद
मन जो था शहर -सा
अब वीरान- रेगिस्तान- सा -मौन
उम्मीद मृग - मरीचिका
प्रेम -जल -जैसे- स्वप्न...!!!
जीवन -रेगिस्तान में
मरीचिका -प्रेम ढूढ़ने
बनजारन -मैं...
रोज़ करती हूं तय
रेत -भरा -मीलों सफर ...!!
टांग - सूरज- बालों में
टाँक चांद -दुपट्टे में
नव -यौवन को ढकती चुनरी से
पसीने से उजागर होते
अधर श्वेत - चांदनी पहन -ओढ़

भटकती हूं रात- दिन- कहीं- मैं
इस बंजर जमीन पर...!!
कभी -कहीं- कब -क्या मैं
प्यास -जल -खुद की तलाश में...??
सूखे- दरिया -से -नमकीन -होंठ
आँधी -रेत -सी -सूखी -आँखें
नागफनी -लहूलुहान-दर्द-मन
रेगिस्तान में भी जैसे
बहा -अश्क़ आँखों से
करता है बिन -बादल-बारिश..!!
अब -जब -तब- लेकर - नाम
तेरा -रोप देती हूं
कुछ पौधे - पेड़
इस कोशिश में यह बंजर-मन
हरा-भरा जंगल जाए बन ...
खिलें रंग- बिरंगे -नव फूल...!!
बादल -से तुम, बारिश सी मैं
यूँ गुज़रूँ आँखों के रस्ते
मिल रहा हो अनायास
रेगिस्तान से जैसे समुद्र ..!!

कन्यादान

प्रोमिला दुवा

अजीब रिवाज़ है,
हमारे समाज का....
बेटियां
जो जान से ज़्यादा प्यारी होती हैं,
दान कर दी जाती हैं,
और नाम दिया जाता है,
कन्यादान....
और दान भी ऐसे महापुरुष को,
जिसे आप जानते तक नहीं,
दान के साथ दहेज़ भी चाहिए उसे,
और इज़्ज़त बेशुमार,
अपने परिवार की....
कन्यादान
यानि क़ुरबानी अपने ही जिगर के टुकड़े की,
अपने ही हाथों.....
बस चंद मंत्र और फेरे,
और अज्ञातवास....
छोड़ दिया जाता है उसे,
उसके मुक़द्दर पर,
अब वोह खूंटे से बंधी
या खाई में गिरी,
या सोने के पिंजरे में क़ैद हुई,
कोई नहीं जानता....
इक देहरी लांघ कर,
दूसरी दहलीज़ में दाख़िल हुई,
वोह लाल जोड़े में लिपटी,
माँ की जान
खूंटा बहुत मज़बूत है,
खाई बहुत गहरी है,
और पिंजरा तो बन्द है,
पाँव में बेड़ियां हैं -- मर्यादा की,
ज़ुबान में लिहाज़ है परवरिश का,और,
दिल ओ दिमाग़ पर छाया है,
इक डर समाज का,
लोग क्या कहेंगे.....
जी हां, लोग क्या कहेंगे
दो घरों की बेटी को,
इक घर भी नसीब ना हुआ
आँसू पीकर, ग़म खा कर,
यही सोचती रही??
माँ सुनेगी तो मर जाएगी,
बाप सुनेगा तो,
तड़प उठेगा,
और भाई तो,
लक्ष्मण रेखा ही पार
कर जाएगा,
और दाग़ दाग़ तो,
परवरिश को लग जायेगा,
लाल जोड़े में लपेट कर बेटियां,
कर दी जाती हैं क़ुर्बान,
और नाम दिया जाता है,
कन्यादान ...

दुनिया बाजारों वाली

रश्मि सिंह

ये तो दुनिया है बेकार,
सब हैं ठगने को तैयार,
कुछ भी कहना है मुश्किल,
और चुप रहना भी मुश्किल,
यहाँ सब ही खड़े हैं;लेकर झोली खाली,
ये तो दुनिया है बाजारों वाली।

लेकर के भगवान का नाम,
पूरे करते अपने काम,
आगे क्या होगा अंजाम,
ये तो जानें बस मेरे राम,
बनके ठगती है दुनिया कितनी भोली-भाली,
ये तो दुनिया है बाजारों वाली।

विश्व साहित्य सेवा संस्था के पटल पर कव्य पाठ

ये तो धंधा चौकस यार,
पूरा नफे का कारोबार,
आपके डर को बना हथियार,
सब हैं ठगने को तैयार,
हो गया है लोगों का तो ज़मीर खाली,
ये तो दुनिया है बाजारों वाली।

तिरंगे से हुई बात

- रीना दयाल

कल रात मुझे तिरंगा मिला,
एयरपोर्ट के पास में,
फ्लाईओवर की दीवार में बने,
एक छोटे-से छेद में अटका हुआ था,
दोबारा गिर न जाऊँ,
इस डर से कुछ, सहमा हुआ था,
पर आते-जाते राही से,
मिलना वो चाह रहा था,
अपने हृदय की बात को,
कहना वो चाह रहा था!
ट्रैफिक लाइट पर गाड़ी रुकी,
तो मैंने उससे पूछा-
यहाँ क्या कर रहे हो?
तुम तो मुझे परसों दिखे थे,
चौराहे पर खड़ी,
चुन्नी के हाथ में,
या उसके पीछे दौड़ती
मुन्नी के साथ में,
हर गाड़ी के शीशों से
उम्मीदें लगा रही थीं,
छोटे-बड़े तिरंगे लिए
गणतंत्र मना रही थीं!
क्या तुम्हें खरीदा था किसी टैक्सी ड्राइवर ने
या फिर उनकी गाड़ी में बैठी महिला ने?
जिसकी सीट से सरकके,सड़कपे जा गिरे
तुम फिर धूल मिट्टी में पड़े, उदास थे बड़े तुम!
तुम वही हो जो कचरेवाले को मिले थे?
या गार्बेज बैग्स बेचते,बंटू को दिखे थे?
उनमें से किसी एक ने,
तुमको यहाँ सजाया,
कचरे के ढेर से उठाके,
मान है बचाया।
तिरंगे ने दिया जवाब,
हाँ, शायद मैं वही हूँ,
जो कई दिनों से देश के,
हर कोने में दिख रहा था।
शहरों, गली-नुक्कड़ की,
शोभा बढ़ा रहा था!
लेकिन क्या थी वो जीत,
भारत के गणतंत्र की?
इस देश में जनतंत्र की?
स्वतंत्र-लोकतंत्र की?
हमारी कामना तो थी,
एक संपन्न देश-राष्ट्र की,
समान शिक्षा-रोज़गार,
अवसर लिए समाज की।
संविधान के निर्माताओं का,
क्या स्वप्न पूरा हो सका?
क्या देश के हर बच्चे को,
हक़ उसका मिल सका?
तिरंगे के इन सवालों में,
मैं उलझी हुई रह गई।
इतने में बत्ती बदली,
और टैक्सी आगे बढ़ गई।

-सिंगापुर

आप भी सीख सकते हैं स्पेनिस

पूजा अनिल

मुझसे कई बार लोग पूछते हैं कि मैंने स्पेनिश कैसे सीखी? पूछने वालों में भारतीय भी हैं और स्पेनिश भी।

साल 1999 में जब मैंने पहली बार स्पेन की धरती पर कदम रखे तो थोड़ी बहुत स्पेनिश सीखी थी एक नौजवान से जो स्पेनिश, इटैलियन और रशियन भाषाएँ जनता था। लेकिन मजेदार यह कि वहाँ सीखा हुआ अक्षर ज्ञान और शब्द ज्ञान तो स्पेन में काम आया किन्तु वाक्य बनाना टेढ़ी खीर साबित हुआ।

स्पेन में उस समय अंग्रेजी नाम मात्र ही चलती थी। कहीं भी बाहर कदम रखो तो भाषा ज्ञान ज़रूरी था। ऐसे में पहले पहल पतिदेव से बने बनाये वाक्यांश सीखती फिर ही निकलती थी घर से। सबसे दुरूह होता था फल सब्जियां खरीदने अकेले जाना। उसे आसान किया मेरी जेठानी ने। भला हो उसका कि उसने मदद की। वो सब्जियों के, फलों के नाम बता देती और दूकानदार से क्या कह कर माँगना है वह भी समझा देती।

इस तरह लगभग शुरूआती पंद्रह बीस दिन निपट गए। लेकिन अपने राम को तो हमेशा यहीं स्पेन में रहना था, इस काम चलाऊ मन्त्र से भला कब तक खुद को सेव किया जा सकता था? और फिर साप्ताहांत पर जब कई स्पेनिश मित्र मिलते तो उनसे बातचीत कैसे की जाए? पतिदेव से सलाह मशविरा किया तो उन्होंने सलाह दी कि टी वी देखना शुरू कर दो और पत्रिकाएं पढ़ना शुरू कर दो। पत्रिकाएं पढ़ना तो मन माफ़िक काम था लेकिन टी वी नाम का उस समय का बड़ा सा डब्बा उर्फ़ इडियट बॉक्स कतई ना सुहाता था गुड़िया रानी को!

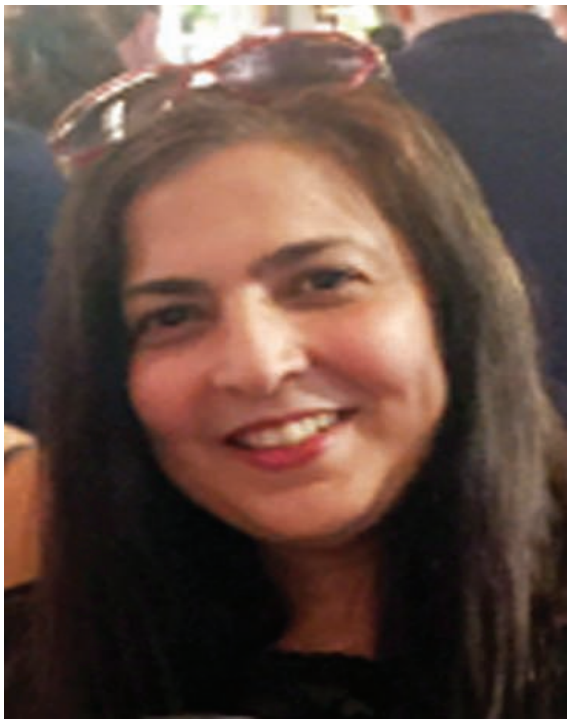

पर उस समय सबसे बेहतरीन ऑप्शन यही था। अतः बिना देर किये आजमाया गया यह नुस्खा। दिन में और रात में समाचार सुने जाते और दोपहर में और शाम को सारे काम निपटाने के बाद टी वी पर चल रही बड़ी बड़ी हस्तियों की बहस बाजी सुनी जाती। सामाजिक मुद्दों पर होने वाले कार्यक्रम में घर बैठे मैं भी शामिल हो जाती, यानि अपनी भी अदृश्य उपस्थिति रहती वहाँ टी वी के जरिये। इस से फायदा यह हुआ कि शब्दों को एक दूसरे से पृथक करना सीखा। यहां यह बताना प्रासंगिक है कि स्पेनिश लोग तीव्र गति से बात करना अपनी शान समझते हैं और यह भी अपनी शान में शामिल करना नहीं भूलते कि उनकी भाषा खूब समृद्ध है शब्दकोष और व्याकरण की दृष्टि से भी। हाँ तो हम भी फर्राटेदार स्पेनिश बोलने की और अग्रसर हो रहे थे। शब्द ज्ञान अपने आस पास के लोगों से पूछ पूछ कर बढ़ता गया। कुछ मदद उन दुकानदारों ने भी की जो काम चलाऊ अंग्रेजी बोल लेते थे। पढ़ने के लिए कुछ पत्रिकाएं भी मिल गईं जिनसे हमने कई वाक्य बनाना और शब्द ज्ञान प्राप्त किया। संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया में भेद करदिना समझा। विशेषण और समानार्थक/विलोम शब्द सीखे। इसी के जरिये कई स्पेनिश हस्तियों को नाम और चेहरों से भी जाना पहचाना। इस सब में लगभग तीन महीने बीत गए। प्राथमिक शिक्षा पूर्ण होने के बाद की ज्ञान पिपासा बलवती थी। अब समस्या थी उच्चारण दोष दूर करना और व्याकरण का सही सही प्रयोग करना। आखिर किस तरह सीखा जाए? उसका बड़ा मजेदार किस्सा है। रोज़ ही सुबह उठकर ताज़ी सब्जी लेने जाने का नियम था मेरा। घर के आस पास की गलियां और वहाँ की दुकानों से इसी तरह परिचय हुआ था।

रोज़ ही आते जाते देखती थी कि वहाँ एक अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन सीखने की अकादमी थी। इच्छा तो खूब होती थी कि किसी रोज़ भीतर जाकर स्पेनिश भाषा सीखने के लिए पूछ आऊं। पर बाहर बोर्ड पर स्पेनिश भाषा सिखाने का विवरण ही न था। सो हर रोज़ अपनी इच्छा स्थगित कर देती। उस पर समस्या यह भी थी कि मैं अपनी बात कहूँगी किस तरह?

बोलना तो अब तक टूटा फूटा ही आता था न !

लेकिन जब तीन महीने बाद मेरा शब्दकोष और आत्मविश्वास बढ़ गया तो एक दिन पतिदेव से बात की, उनसे हिम्मत उधार ली और अगले दिन उस अकादमी में भीतर कदम रख ही दिए। शाम का समय था। शायद उसी समय कोई कक्षा ख़तम हुई होगी, कुछ स्टूडेंट्स उसी समय बाहर निकले थे। कुछ संकोच के साथ ऑफिस में प्रवेश किया। मन ही मन, याद किये हुए वाक्य एक बार पुनः दोहराये।

भीतर एक सुन्दर सी स्पेनिश युवती अपने पूरे स्त्रियोचित श्रृंगार के साथ हंसमुख रूप में ऑफिस चेयर पर विराजमान थी। उसने मेरा स्वागत किया। मैंने भी स्पेनिश में अभिवादन किया। उसे बताया कि मैं भारत से आई हूँ और अब स्पेनिश सीखना चाहती हूँ। झटपट बिना देर किये उस से अपनी स्पेनिश सीखने की इच्छा ज़ाहिर कर दी।

भारत से कुछ प्यारा सा जुड़ाव है यहां के लोगों का। जैसे ही उसने भारत का नाम सुना कुछ और आदर, कुछ और ही खुशी से बात की मुझसे। मैं तो धीमी गति से बात कर रही थी लेकिन वह जेट गति से स्पेनिश में बात करने लगी। तब मुझे उस से निवेदन करना पड़ा कि ज़रा स्पीड कम कीजिये। एक बार तो उसने बहुत ही प्रेरणा दायक बात कही कि मैं काफी अच्छी स्पेनिश बोल लेती हूँ फिर कक्षा की ज़रूरत क्या है! कुछ लाली उभर आई अपनी तारीफ सुन, फिर मैंने कहा आपकी तरह तेजी से नहीं बोल पाती, इसलिए सीखना है। तब उसने कहा उस अकादमी में स्पेनिश नहीं सिखाई जाती है अतः कोई स्पेनिश टीचर है ही नहीं। मैं मन ही मन निराश हो गई।

फिर अपनी धीमी गति वाली स्पेनिश में ही मैंने उस से पूछा कि क्या वह किसी अन्य स्पेनिश टीचर को जानती है जो मुझे बोलना सिखा सके? मेरी इस बात पर वह फिर अपने सुन्दर चेहरे पर बड़ी सी पिंक (उसका सबसे पसंदीदा लिपस्टिक का रंग/शेड यही था) मुस्कान ले आई और मुझसे कहा कि वैसे तो वह स्पेनिश नहीं सिखाती पर जब अकादमी में सब कक्षाएं ख़तम हो जाएँगी तब शाम को वह मुझे अलग से कक्षा देगी।

अँधा क्या चाहे, दो आँखें ही ना! मेरी मुराद पूरी हुई। सप्ताह में तीन दिन एक एक घंटे की कक्षा देने के लिए वो राजी हो गई। फीस बताई उसने। शाम के सात बजे का समय बताया उसने। (यहां कक्षाएं प्रति घंटा के हिसाब से ही चलती हैं) मैंने स्वीकार किया और अगले ही दिन से उस से स्पेनिश सीखना शुरू कर दिया। उसने मेरे लिए टेक्स्ट बुक्स में से कुछ पन्ने प्रिंट निकाल कर बच्चों की तरह एक एक कहानी अथवा पैराग्राफ पढ़ाते हुए, सवाल जवाब करते हुए आगे बढ़ती गई। जो कुछ मैंने तब तक सीखा था, उसे संवर्धित करती गई वो । व्याकरण ज्ञान दिया उसने। और इस तरह अगले तीन महीने मैंने स्पेनिश बोलने की प्रैक्टिस उसकी कक्षा में की। इस तरह छः महीने में स्पेनिश भाषा सीखने का उपक्रम संभव हुआ। फिर तो खूब प्रयोग में आई यह भाषा। अब तो हिंदी और स्पेनिश भाषा में परस्पर अनुवाद करना भी पसंद है मुझे।

अपने अनुभव से कहती हूँ कि छः महीने में जिस तरह मैंने स्पेनिश भाषा सीखी उसी तरह आप भी अच्छी तरह से स्पेनिश सीख सकते हैं।

बस एक सतत लगन रखना और विश्वास रखना कि आप निश्चित तौर पर सीख सकते हैं। सीखना कभी ख़त्म नहीं होता, अतः अब भी कुछ न कुछ सीखती ही रहती हूँ इस भाषा में।

परिचय/उदयपुर (राजस्थान) में जन्मी पूजा अनिल प्राणी विज्ञान में स्नातकोत्तर हैं। वे 1999 से मद्रिद, स्पेन में निवासरत हैं। हिंदी गुरुकुल स्पेन की संस्थापक हैं तथा साल २००८ से स्पेन की राजधानी मद्रिद में हिंदी की कक्षा चलाती हैं। इन्होंने विदेशी विद्यार्थियों के लिए हिंदी सीखने के रुचिकर नए प्रयोग किये हैं तथा भारत से बाहर हिंदी को प्रतिष्ठा दिलाने में सहयोग किया है। वे १२ से अधिक राष्ट्र (फ्रेंच, स्पेनिश, अमेरिकन, ब्रिटिश, रोमानियाई, जर्मन, मरोक्की, होंडुरास, भारतीय, फिलीपींस, वेनेजुएला, इटैलियन इत्यादि) के विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा ज्ञान दे चुकी हैं ।

लेखन के क्षेत्र में सक्रिय रहते हुए हिंदी में विविध विधाओं (कहानी, लघुकथा, लम्बी कहानी, कविता, गीत तथा आलेख इत्यादि) में रचना कार्य करती हैं। इनकी कहानियाँ, कविताएं एवं आलेख भारत के कई प्रसिद्ध पत्र पत्रिकाओं (पाखी, मधुराक्षर, कादम्बिनी, नई दुनिया, अनुभूति, सेतु, उर्वशी इत्यादि) में प्रकाशित हो चुके हैं। इनके लिखे कुछ गीत संगीतबद्ध किये गए हैं। वे हिंदी एवं स्पेनिश दोनों ही भाषाओं में कवितायें लिखती हैं और परस्पर अनुवाद भी करती हैं। साथ ही विभिन्न ऑनलाइन हिंदी वेबिनार और गतिविधियों में सम्मिलित हुई हैं।

पदवेश (फुटवियर) व्यवसाय के बढ़ते चरण

दिल्ली निवासी श्री सुरेश खांडवेकर कई भाषाओं के ज्ञाता, संगीतज्ञ और कला के मर्मज्ञ होने के साथ ही देश की राजधानी नई दिल्ली में फुटवियर का व्यवसाय करने वाले उद्यमियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे दो करोड़ लोगों को रोजगार देने वाली फुटवियर इंडस्ट्री से जुड़े व्यवसाईयों की संस्था के अध्यक्ष हैं तथा इस व्यवसाय पर केन्द्रित पत्रिका निकालते है। स्वयं पत्रकार होने के नाते देश-विदेश का भ्रमण भी करते रहते हैं। वे निजी यात्रा पर भोपाल पधारे तो इस अवसर का लाभ उठाते हुए मैंने 'निर्दलीय' के लिए उनका साक्षात्कार लिया जो यहां प्रस्तुत है:-

■ निर्दलीय- आप फुटवियर व्यवसाय में कैसे आए?

■ श्री खांडवेकर-मैंने अपने जीवन में २० जगह नौकरियां कीं जिनमें वाणिज्य व्याख्याता जैसा पद सम्मिलित रहा लेकिन इस नतीजे पर पहुंचा कि नौकरी पैसा व्यक्ति के लिए आर्थिक प्रगति के अवसर उतने नहीं है जितने किसी उद्यमी या किसी उद्यम से जुड़े व्यक्ति के लिए सुलभ होते हैं। नौकरी पैसा व्यक्ति यदि किसी उच्च पद पर है तो भले ही वह आर्थिक दृष्टि से संपन्न हो किन्तु अन्य व्यक्तियों को आर्थिक संपन्नता तब-तक नहीं नसीव हो पाती जब तक वे सुचितापूर्ण जीवन की बजाय किसी तरह के भ्रष्टाचार से जुड़े न हों। अत: मैंने फुटवियर व्यवसाय पर ध्यान देना उचित समझा।

■ निर्दलीय-आपने फुटवियर व्यवसाय को ही क्यों चुना?

■ श्री खांडवेकर-देश में कई तरह के उद्यम है जिनमें फैशन व कॉटन इंडस्ट्री और चेहरे चमकाने वाली उपभोक्ता वस्तुओं से संबंधित उद्यमों की चमक किसी से छिपी नहीं है लेकिन मुझे लगा कि व्यक्ति के सबसे महत्वपूर्ण अंगों में मस्तिष्क और हृदय को गिना जाता है लेकिन उसके शरीर का एकमात्र आधार तो उसके चरण या पैर होते हैं फिर उनकी रक्षा या हिफाजत करने वाली पादुकाओं या फुटवियर की तरफ क्यों न ध्यान दिया जाए। साहित्यकार होने के नाते मैंने चरण पादुकाओं को ध्यान में रखते हुए डेढ़ सौ से अधिक व्यंग्य और पांच सौ अधिक चुटकुले लिखे। अतएव मैंने पदवेश (फुटवियर) को ही अपने लेखन का केंद्र बनाना उचित समझा। देश में पहले यह व्यवसाय केवल चर्मकारों से जुड़ा था। ठीक उसी प्रकार जैसे मिट्टी के बर्तनों का व्यवसाय कुम्हारों तक केंदित रहा, सुनारी अथवा सोने चांदी का व्यवसाय

स्वर्णकारों और लोहारी का व्यवसाय लोहारों तथा लकड़ी का व्यवसाय बढ़ईयों तक सीमित रहा किंतु समय के साथ इन व्यवसायों की प्रवृति बदलती गई तथा ये व्यवसाय जाति विशेष तक सीमित नहीं रहे और ब्राम्हण, वैश्य, कायस्थ आदि सवर्ण कहे जाने वाली जातियां भी इन व्यवसायों में प्रवेश करती गई और मैंने भी फुटवियर व्यवसाय से जुड़ना उचित समझा।

■ निर्दलीय-आप फुटवियर व्यवसाय पर केंद्रित पत्रिका निकालते हैं। आपको यह कैसे सूझा?

■ श्री खांडवेकर-इस व्यवसाय से जुड़ने के पूर्व कुछ समाचार पत्र-पत्रिकाओं से जुड़ा रहा और जब मैंने फुटवियर व्यवसाय पर ध्यान दिया तो मुझे लगा कि इस व्यवसाय पर केंद्रित पत्रिका भी होना चाहिए ताकि इस व्यवसाय में संलग्न उद्यमियों को व्यवसायिक मार्गदर्शन मिल सके।

■ निर्दलीय-क्या आपने कभी किसी अन्य देश में जाकर इस व्यवसाय का अध्ययन किया?

■ श्री खांडवेकर-लगभग तीन दशक पूर्व मैं ताईवान गया था। ताईवान केरल से भी छोटा देश है, लेकिन वहां के लोग बड़े जागरूक हैं तथा वे जिस किसी उद्यम या व्यवसाय अथवा कारोबार को अपनाते हैं, वे उसे बढ़ाने हेतु तन-मन धन से जुट जाते हैं। वहां जिन लोगों ने फुटवियर व्यवसाय को अपना रखा है उन्होंने इस व्यवसाय में भी काफी महारत हासिल की है।

■ निर्दलीय-ताइवानी तो हिन्दी और अंग्रेजी की बजाय अपनी चीनी भाषा में बात करते हैं फिर आपका उनसे संवाद कैसे होता था?

■ श्री खांडवेकर-जी हां, यह सही है कि ताइवानी लोग चीनी भाषी हैं लेकिन जो उद्यमी या व्यवसायी है वे थोड़ा बहुत या टूटी-फूटी अंग्रेजी जानते हैं। ताइवान पहुंचते ही मैं ज्यो ही विमान तल से बाहर आ रहा था तब एक ताइवानी अधिकारी ने मुझे यलो पेजेज (yello pages) निशुल्क भेंट करते हुए कहा कि यह व्यवसायिक निर्देशिका आपका मार्गदर्शन करेगी। मैंने पत्रिका उलट-पलटकर देखी तो मुझे दमदार, ज्ञानवर्धक और आकर्षक लगी। मैंने विमानतल से बाहर आकर जिस होटल को अपना गतिविधि केंद्र बनाया वहां होटल वाले ने भी मेरा सहयोग किया। मैंने उसे हैलो कहा तो उसने पलटकर 'हुई' कहा जिसका अर्थ वे हैलो से लेते है। उसने मुझे परस्पर संवाद या बोलचाल से संबंधित समान (Connon) शब्दों वाली एक पुस्तक भी भेंट की जिससे मैं ताइवानी लहजे और तहजीव से भी बाकिफ हो सका। मैंने उस पुस्तक की मदद से अपने चल भाषा से संदेश (SMS) भी भेंजे जिसके परिणामस्वरूप कई ताइवानियों ने मुझसे पूछा कि क्या आप उनके फुटवियर उद्यम का अवलोकन करना चाहेगे? मैंने इसका सकारात्मक उत्तर दिया। परिणाम स्वरूप मैंने कई फुटवियर उद्यम देखें जिससे मैं यह जान सका कि भारत में फुटवियर इंडस्ट्री मै जिन लिम्फा मशीनों का उपयोग होता है वे ताइवान से ही आयात की जाती है।

■ निर्दलीय-क्या केंद्र व राज्य सरकारें भी आपके व्यवसाय की मदद करती हैं?

■ श्री खांडवेकर- केंद्र व राज्य सरकारों का प्रचार-प्रसार करने वाले जनसंपर्क या प्रकाशन विभाग हमारी कोई मदद नहीं करते लेकिन निजी क्षेत्र के उद्यमियों से अवश्य हमें सहयोग व प्रोत्साहन मिलता है। वैसे केन्द्र सरकार की एक संस्था है- केन्द्रीय फुटवियर प्रशिक्षण संस्थान (CFT) जिसके आगरा व कानपुर में केन्द्र हैं जो फुटवियर व्यवसाय मे आने के इच्छुक लोगों को प्रशिक्षण देते हैं। इसी तरह एक अन्य संस्था है-फुटवियर रूपांकन एवं विकास संस्थान (FDDI) जिसके नई दिल्ली, नोयडा, छिंदवाड़ा, शहडोल आदि ८ नगरों में केन्द्र हैं। यह संस्थान विज्ञापन भी देते हैं किन्तु हमारी पत्रिका को विज्ञापन के रूप में केवल निजी संस्थान ही सहयोग करते हैं। वैसे फुटवियर के स्थानीय बाजार के साथ ही राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार भी है जिससे हमारे फुटवियर व्यवसाइयों के उत्पाद आम लोगों तक पहुंच पाते है। इटली, फ्रांस, जापान, जैसे यूरोपीय देशों में फुटवियर के चैन स्टोर है। इटली दुनिया का वह देश है जहा फुटवेयर का व्यवसाय सर्वाधिक होता है किंतु ताईवान भी इस व्यवसाय में काफी आगे हो गया। यह बात अलग है कि चीन ताईवान से भी आगे निकल रहा है। भारत के शाहरूख, अमिर खान, अमिताभ बच्चन जैसे ४० से अधिक अभिनेता फुटवियर व्यवसाय के ब्रांड एम्बेसडर के रूप में प्रचार करते हैं जिससे भारत का फुटवियर व्यवसाय अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर पहुंचकर ख्याति अर्जित कर रहा है। फुटवियर के २५ से अधिक राष्ट्रीय ब्रांड है तथा मध्यम दर्जे के ४०० से अधिक ऐसे ब्रांड है जिनकी राष्ट्रीय स्तर पर भी धाक जम चुकी है।

■ निर्दलीय-आप आगामी १७ फरवरी से नई दिल्ली के प्रगति मैदान में फुटवियर इंडिया एक्सपो का आयोजन कर रहे हैं। उसकी प्रेरणा कैसे मिली?

■ श्री खांडवेकर- इसकी प्रेरणा हमें फुटवियर उपभोक्ताओं से मिली। पहले हम प्रगति मैदान की वजाय दूसरे स्थानों यथा जापानी पार्क, रोहिणी में फुटवियर मेले या एक्सपो का आयोजन करते रहे, लेकिन हमें उपभोक्ताओं ने ही इस व्यवसाय को प्रगति मैदान तक ले जाने के लिए प्रोत्साहित किया। मुझे उम्मीद है कि प्रगति मैदान दिल्ली में लगाए जा रहे इंडिया एक्सपो से हमें न केवल देश व्यापी बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त होगी तथा फुटवियर व्यवसायी अपना व्यवसाय अन्यान्य देशों तक फैलाने हेतु प्रेरित होंगे।

■ निर्दलीय- आप निर्दलीय के पाठकों एवं आमजन को कोई संदेश देना चाहेंगे?

■ श्री खांडवेकर-भारत में पादुकाओ का व्यक्ति के जीवन में बड़ा महत्व रहा है। सभी जानते है कि राम जी को जब वनवास हुआ तब उनके भाई भरत ने अपने अग्रज की पादुकाएं लेकर चौदह वर्ष तक शासन किया था। युद्द के मैदानों में लड़के पैदल हों या घुड़सवारी कर रहे हो पदवेश या जूतों के बिना मैदान में नहीं उतरते थे। राम युग के बाद कृष्ण युग में महाभारत का युद्द हुआ हो या उसके बाद जितने युद्द हुए सबमें यही स्थिति रही। अब जमीनी युद्द न होकर आकाशीय युद्द ज्यादा होते है लेकिन लड़ाके पदवेश के बिना नहीं देखे जाते। इससे पदवेश या फुटवियर का महत्व स्वयं प्रमाणित हो जाता है।

हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि हेतु समर्पित लेखिका: डॉ. सुनीता शर्मा

डॉ. सुनीता शर्मा नई दिल्ली से प्रकाशित मासिक 'निर्दलीय'के हाल ही प्रकाशित प्रवासी भारतीय विशेषांक के संपादन मे विशेष सहयोगी रहीं। हमने 'निर्दलीय' का वर्ष 2022 के मई माह में प्रकाशित विशेषांक को डॉ. सुनीता शर्मा के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर केंद्रित किया था। मुख्यतय: वे कविता और कहांनी लेखन करती है। सुनीता जी पिछले 21 वर्षों से न्यूजीलैंड के सबसे बड़े शहर ऑकलैंड में रहते हुए शिक्षण कार्य के साथ ही न्यूजीलैंड के हिंदी लैंग्वेज एंड कल्चरल ट्रस्ट से जुड़ी हुई हैं तथा विश्व साहित्य सेवा संस्थान की राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत हुई हैं।

हाल ही ऑकलैंड निवासी पत्रकार सुश्री नवदीप कौर मरवाह ने उनका साक्षात्कार लिया जिसके प्रमुख अंश हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि 'निर्दलीय' के पाठक डॉ. सुनीता शर्मा के कृतित्व एवं व्यक्तित्व से और अधिक परिचित हो सकें।

डॉ. सुनीता शर्मा लेखन विशेषकर कविता के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय हैं। उनकी चार पुस्तकें अनछुए स्पर्श, मैं गांधारी नहीं, जागृति और चिर-प्रतीक्षित प्रकाशित हो चुकी हैं। वे विगत 35 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में भारत और न्यूजीलैंड में सक्रिय रही हैं। संप्रति वे शिशु शिक्षा को लेकर कार्य कर रही हैं। उनके ब्लॉग 'सुनीता के दिल से' मैं कविताएं नियमित रूप से प्रकाशित होती है। यूट्यूब चैनल और उनके ब्लॉग के न्यूजीलैंड ही नहीं दुनियाभर में दर्शक हैं।

डॉ. सुनीता शर्मा का काव्य संग्रह'चिर प्रतीक्षित' का विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर न्यूजीलैंड स्थित भारतीय उच्चायुक्त नीता भूषण द्वारा विलिंगटन में लोकार्पण किया गया। यद्यपि सुनीता जी इस अवसर पर स्वयं उपस्थित नहीं हो सकी थीं। हम यहां ऑकलैंड से प्रकाशित पत्रिका 'इंडियन वीकएंडर' में प्रकाशित डॉ. सुनीता शर्मा से लिए गए साक्षात्कार के प्रमुख अंश प्रकाशित कर रहे हैं। यह साक्षात्कार पत्रिका की ओर से नवदीप कौर मरवाह ने लिया था। इस साक्षात्कार में उनके न्यूजीलैंड के प्रवासी जीवन एवं फिजी में होने वाले विश्व हिन्दी सम्मेलन में उनकी भागीदारी के साथ हिन्दी साहित्य से जुड़े अन्य विषयों पर प्रकाशडाला गया है।

प्रश्न-पुस्तक के विषय को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर- मेरी पुस्तक 'चिर प्रतीक्षित' शीर्षक का अर्थ है लंबी प्रतीक्षा अथवा सतत प्रतीक्षा मैंने अपनी कविताओं के माध्यम से इतिहास में वर्णित स्त्री-पुरुष की विभिन्न भूमिकाओं का उल्लेख किया है जिसमें कोरोना महामारी के सेवाव्रत्ती योद्धाओं के प्रशंसनीय योगदान का चित्रण होने के साथ ही समाज माध्यमों के अंधेरे पक्ष की भी चर्चा की गई है तथा जीवन के विविध अर्थो को दर्शाया जाने के अलावा सामाजिक अन्याय का भी चित्रण हैं। यह सब हमारे वर्तमान, अतीत और भावी समाज से प्रेरित है। पुस्तक की बिक्री से होने वाली आय डॉ. सुनीता शर्मा द्वारा यूनीसेफ को दी जाएगी।

प्रश्न-पुस्तक किस भाषा में हैं तथा कहां से खरीदी जा सकती है।

उत्तर- पुस्तक हिन्दी में प्रकाशित है और एमेजान, किंडल, फिल्फकार्ट और कोवो पर दुनियाभर में उपलब्ध है। चुकी मेरे कई अनुगामी केवल अंग्रेजी बोलते हैं इसलिए 'चिर प्रतीक्षित' और अनुछुएं स्पर्श के अंग्रेजी अनुवाद हेतु मैं प्रकाशकों से संपर्क में हूं।

प्रश्न- आप हिंदी भाषा को बढ़ावा देने और बनाए रखने की दिशा में बहुत काम कर रही हैं। आप ऐसा क्यों सोचती है कि यह विशेषकर न्यूजीलैंड में जरूरी है।

उत्तर- मैं न्यूजीलैंड में सदैव भारतीय भाषाओं और संस्कृति को बढ़ावा देने के पक्ष में रही हूं। भाषा संस्कृति का एक बड़ा भाग है तथा हमारी संस्कृति को बनाए रखने के लिए जरूरी है। हमें अपनी विरासत को नहीं छोड़ना है।

प्रश्न- फिजी में 15 से 17 फरवरी तक विश्व हिन्दी सम्मेलन हो रहा है। क्या आप सोचती है कि हिन्दी की उन्नति में यह सहायक होगा?

उत्तर- पैसिफिक क्षेत्र में सम्मेलन पहली बार हो रहा है तथा मुझे वहां उपस्थित होने का अवसर मिल रहा है जिससे मैं गौरवान्वित हूं। सम्मेलन से भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा। यह हिन्दी साहित्य को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मुख्य धारा में लाने का उचित अवसर होगा।

प्रश्न-'निर्दलीय' पत्रिका के संपादन में अपनी विशिष्ट भूमिका के बारे में बताएं।

उत्तर-'निर्दलीय' का अर्थ है स्वतंत्र या पक्षमुक्त। इसका संपादन श्री कैलाश आदमी करते हैं। इसके प्रवासी भारतीय अंक हेतु मैंने 30 प्रवासी लेखकों की रचनाएं संकलित की थी जिनका प्रकाशन हुआ है। पत्रिका के माध्यम से मुझे तमाम लेखकों से संपर्क का अवसर मिला।

अच्छे लेखन के लिए अध्ययनशीलता जरुरी

सुरेश खांडवेकर

यह विषय सरल और सहज लगता है परंतु समझना चाहें तो सूक्ष्म और गहन है । इसके दो भाग हैं- अच्छा लेखन और दूसरा, स्वाध्याय या अध्ययनशीलता। एक तीसरा विभाग है जिसे अनुभव या साक्षात्कार कहते हैं। यह घर बैठे नहीं आ सकता।

अच्छा लेखन अर्थात अच्छे विचार, अच्छा विषय और उसका का स्पष्ट निर्वहन हो , जो पठनीय साहित्य में स्थान प्राप्त कर सकें। साहित्य क्या है ? संग्रहीत की हुई या प्राकृतिक रूप से संग्रहित होने वाली वाणी । कहते हैं वाणी आकाश में व्याप्त हो जाती है। ऐसे साहित्य की कोई सुनिश्चित परिभाषा नहीं हो सकती।

साहित्य क्या है ? साहित्य एक टूलबॉक्स की तरह जीवन में उपयोगी होता है। टूल बॉक्स में तरह-तरह के छोटे बड़े औजार और उपकरण होते हैं । जो सहज और कठिन परिस्थितियां सुलझाने में काम आते है। साहित्य शब्द के पहले एक शब्द छुपा हुआ है । वह है ज्ञान अर्थात ज्ञान साहित्य। जीवन के प्रत्येक अवस्था में यह ज्ञान हित्य काम आता है। हम विषम परिस्थितियों का सामना करने के लिए मार्ग दिखाता है। संक्षेप में सांसारिक और आध्यात्मिक या लौकिक पारलौकिक उत्थान के लिए साहित्यकारों के, चिंतकों के साहित्य की आवश्यकता होती है।

कुछ लोग कहते हैं साहित्य समाज का दर्पण होता है। यानी जो जैसा है वैसा दिखाना ही साहित्य है! तो समाचार पत्रों में समाज का दर्पण रोज ही दिखाई देता हैं। स्वतंत्रता के पूर्व के समाचार पत्रों को रद्दी नहीं समझते थे। समझदार लोग उन दिनों अखबार रद्दी में नहीं बेचते थे। स्वतंत्रता के बाद , समाचार पत्र थोड़ा बहुत संभाला जाता था। उन दिनों इसे वर्तमान पत्र पर कहते थे वर्तमान में भविष्य की नींव रखी जाती थी। अब इसकी दशा बहुत बदल गई है बल्कि दयनीय हो गई है ? साथ ही पूर्णतया कमर्शियल हो गई है। अब तो समाचार पत्र पत्रिकाओं की आयु घंटे भर की भी नहीं है। बड़े-बड़े समाचारों पत्रों के समूह उसके दाम यह कहकर ले रहे हैं कि इससे ज्यादा मूल्य की तो इसकी रद्दी होगी। स्पष्ट है यह समाचार पत्रों में साहित्य नहीं है। ऐसे समाज के दर्पण का क्या उपयोग जो दिशा ना दे सके, जो केवल सूचना समाचारों से ही भरें रहते हैं। मार्गदर्शक ना बन सके। इस समय समाचार पत्र जो बिकता है वहीं परोस रहे हैं।

फिर भी साहित्य व्यवहारिक या सांसारिक और आध्यात्मिक या आत्मज्ञान का होता है। जो साहित्य व्यवहारिक होता है वह भौतिक जीवन यापन के लिए अनिवार्य होता है। सुख संवर्धन, मोह, संवेदना , मनोरंजन और प्रेरणा आदि दैहिक पूर्ति के लिए जो प्रयत्न और प्रयोजन होते हैं वह सब व्यवहारिक साहित्य से जुड़े होते हैं। इसमें किस्से कहानियां ,उपन्यास, लेख गद्य, निबंध, आदि आते हैं। इसकी रचना शैली गद्य पद्य और नाटक प्रहसन आदि होती है। इसी में वह सारा साहित्य आता है जो शिक्षा दीक्षा रोजगार प्रशिक्षण आदि से जुड़ा होता है। उसी आधार पर संग्रहित होता रहता है।

दूसरा साहित्य आध्यात्मिक अथवा आत्मोन्नति का होता है । इसमें वेद, स्मृति, दर्शन,उपनिषद आदि आते हैं। आत्मिक सुख या मन की शांति के लिए यह साहित्य होता है। प्राचीन काल में छापे खाने नहीं थे इसलिए ताड पत्रों, लकड़ी की परतों, पतरो, ताम्र पत्र और पत्थरों तथा स्मारकों पर भी इन्हें संक्षेप में अंकित किए जाते थे। यद्यपि भारत की वर्णमाला बहुत प्राचीन है । तथापि उस समय लेखन सामग्री का इतना विकास नहीं हुआ था जो आज है। अत: विशेष रचनाओं को कंठस्थ कराया जाता था । इस तरह साहित्य स्मृति का विकास हुआ। श्रुति और स्मृति न केवल साहित्य में अपितु संगीत नृत्य में भी समाविष्ट थी। आज भी अनेक विद्वानों को वेद मंत्र,

भगवत गीता, संस्कार विधियां ,सुभाषित, सूक्तियां, मंत्र ,श्लोक,दोहे, छंद चौपाइयां , कुंडलियां, मुक्तक आदि याद है। वाल्मीकि रामायण, वेदव्यास के अनेक विषयों के ग्रंथ, इसी तरह दर्शन शास्त्रों के प्रवर्तकों ने जो जीवन रहस्य और आत्मोन्नति? के मार्ग शास्त्रों में दिखाऐं? है। वह भी बहुत बड़ा सूक्ष्म और गंभीर साहित्य है। संत कवियों का साहित्य सुन सुन कर कानों में बस गया और होठों पर थम गया।

प्राचीन काल में लगभग सारा साहित्य काव्यात्मक होता था उसे सामूहिक रूप से कंठस्थ किया जाता था। वही साहित्य जिसमें शिक्षा दीक्षा और जीवन, जीवन बोध होता था । जिसमें प्रेरणा और प्रोत्साहन होता था।

क्षमा करें, संतों ने अपना साहित्य स्वयं नहीं लिखा, उनके अनुयायियों ने यह काम किया। उनकी वाणी तो सुनने वालों ने अपने मन में धारण कर ली। उनके उपदेशों एवं गीतों और संभाषणों को दुसरे ही लिखते थे।

आप कल्पना कर सकते हैं कि जो हजारों वर्षों पूर्व ऋषि महर्षि द्वारा प्रकट हुआ साहित्य उस समय छपने की स्थिति नहीं था। फिर भी आज तक तरह तरह के रूपों में जीवित है। वे छंद उक्ति, सू?क्ति और कहावतों में अभी भी जीवित है। गिने-चुने शब्दों में बहुत बड़ा ज्ञान, अनेक पन्नों का ज्ञान। इसके विपरीत अनेक पुस्तकों का ज्ञान गिने-चुने शब्दों में ।बहुत अच्छा और बड़ा ज्ञान कम शब्दों में। यही है शब्द ब्रह्मज्ञान जो नित्य साहित्य कहलाता है। यह प्रमाण के रूप में भी उपयोग में आता रहता है।

इस तरह साहित्यकार ?इन दोनों विषयों को अर्थात व्यवहारिक और आध्यात्मिक साहित्य में प्रविष्ट होता रहता है। जब आपको जिस संदर्भ की आवश्यकता होती है और उस समय आप स्मरण करते हैं । आध्यात्मिक साहित्य आगे चलकर तो वह ब्रह्म साहित्य के रुप मे संग्रहित हो जाता है। वैसे जीवन में व्यवहारिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के साहित्य आवश्यक होते हैं।

अब आप समझे कि साहित्य कैसा होना चाहिए लेखन का विषय क्या और कैसे होना चाहिए। जो आपको सोचने समझने के लिए अवसर दें । विषय चाहे मनोरंजन का हो, शिक्षा का हो , प्रेरणा का हो पराक्रम का हो, कथा कहानी का हो या काव्य रचना का हो। कई बार तो अलंकारीक शब्दों के कारण भी रचना पाठको को आह्लादित करती है। उसे आप स्मरण करना चाहते हैं। विचित्र शब्द संयोजन, उसके लयकारी से आप अभिभूत हो जाते हैं , उसे दोहराने लग जाते हैं । उसका गान और शब्द आपको लुभाते रहते है।

इस तरह पहले हमने अच्छे लेखन के संबंध में विचार किया। अच्छा लेखन का विषय सामाजिक, सामयिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक या घटना विशेष से प्रेरित भी हो सकता है। उसकी शैली गद्य और पद्य में हो सकती है। विषय वस्तु समझाने का ठीक-ठाक क्रम होना चाहिए। विषय वस्तु का उद्देश्य धीरे-धीरे स्पष्ट होना चाहिए । साहित्य में रहस्य लगभग होता ही है जो पाठक को बांधे रखता है।

स्वाभाविक है कि विषय वस्तु को लिखने के लिए जिस लेखन या रचना शैली का माध्यम चुना गया है उसमें लेखक में कितना दक्ष है ? अभ्यास भी है या नहीं ? यह एक प्राकृतिक गुण भी होता है अन्यथा विकसित भी किया जा सकता है! यदि छंद बद्ध काव्य है तो उसकी योग्यता और क्षमता रचना में दिखनी चाहिए। जिससे सामान्य पाठक भी उसका आनंद उठा सकें। यानी साहित्य की प्रकृति का और विषय की प्रकृति का अभ्यास भी होना अत्यंत आवश्यक है। बिना प्राकृतिक प्रवाह के निकला साहित्य पाठकों के लिए रुचिकर नहीं होता। चाहे लेखन गद्य में हो या पद्य में रिदमिक, लयबद्धता अर्थात प्राकृतिक ऊर्जा से गतिमान होना चाहिए। जैसे जल का प्रवाह होता है । जैसे वायु का प्रवाह होता है। हवा में आंधी तूफान भी होता है। जल में प्रलयकारी बाढ़ भी आतीं हैं। इस प्रकार की उतार चढाव की स्थिति आती है तो ताल टूट जाता है । रचना का प्रवाह भंग हो जाता है। यहां जरूरी है साहित्य के रचना पक्ष के अभ्यास की। बिना साधना के बिना अभ्यास के स्वाभाविक सार्थक रचना नहीं बन पाती।

दूसरा विषय जो इसमें है अध्ययन शीलता अर्थात विषय की साधना का। इस अध्ययन शीलता का तात्पर्य उस विषय वस्तु से है जिस पर आप रचना के लिए चिंतन कर रहे हैं । विचार कर रचना करने का प्रयत्न कर रहे हैं । विषय चिंतन? लेखक को कहां से कहां ले जा सकता है। उसी तरह पाठक भी उसके साथ चलता जाता है। जिस विषय पर लेखक अपनी रचना प्रस्तुत कर रहा है वह विषय किसके लिए है ? किन पाठकों के लिए हैं ? किस आयु वर्ग का है ? इसका विचार बहुत आवश्यक है। क्योंकि पाठकों के मन स्थिति के अनुसार रचनाकार अपने मन को तैयार करता है और उसी के अनुरूप कल्पना करता है ।कल्पनाओं को साकार करने के लिए अध्ययन और अनुभव काम आते हैं। विषय वस्तु को समझाने के लिए उदाहरण उपमा,अलंकार, मुहावरों और

कहावतों तथा चुटिले व्यंगबाणों का उपयोग भी होता है। जिसमें सामान्यतया जो विशेषण और विषय की शाखाएं होती हैं उससे विषय वस्तु में निखार आता है।

विषय विस्तार दोनों के लिए अध्ययनशीलता, परामर्श और अनुभव, साक्षात्कार की आवश्यकता होती है। रचना पक्ष में कला और कौशल होना चाहिए। कला प्रधान शैली संगत से विकसित होती है। दूसरे, इससे रचना की विषय वस्तु पठन-पाठन, चिंतन और जिज्ञासा से विस्तृत और परिष्कृत होती है। उसमें नई नई शाखाएं खुलती है पल्लवित होती है। साहित्य रचना और हृदय को छू लेने वाली विषयवस्तु ही उसे नित्य साहित्य का स्थान देती है।

अध्ययन में बल तब आता है जब उसमें साक्षात्कार, अनुभव और भ्रमण जुड़ता है। इससे भी कथानक अधिक रोचक और रोचक, गरिमामय और महत्वपूर्ण हो जाता है। इस संदर्भ में दो उदाहरण मेरे सामने हैं। एक वैद्य गुरुदत्त जो उपन्यासकार के रूप में गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड में स्थान प्राप्त कर चुके हैं और दूसरे साहित्यकार विष्णु प्रभाकर।

गुरुदत्त के विषय में बता दूं स्वामी दयानंद और आर्य समाज से प्रभावित थे। पंजाब में जन्मे थे। एमएससी साइंस के साथ-साथ वैद्यकी का अभ्यास भी बहुत अच्छा था। उन्होंने बड़ौदा के महाराजा के दरबार में भी सेवाएं दी। फिर वैद्यकीय के साथ लेखन कार्य आरंभ किया। सौ से अधिक उपन्यास लिखें। प्रत्येक उपन्यास किसी न किसी विषय को लेकर आगे बढ़ा है और पाठकों को घेरे रखता है। संभवामि युगें युगें उपन्यास लगभग 700 पृष्ठ का है। इसमें महाभारत की कथा के साथ-साथ कथा कहने वाला माणिकलाल भी आपको 700 पृष्ठों में याद आता रहता है। माणिकलाल महाभारत काल के एक रूप में इस आधुनिक काल में प्रकट होता है। और लेखक गुरुदत्त से कहता है मैं संजय हूं और तुम उस समय के युधिष्ठिर हो। तुम्हें युद्ध की और संपूर्ण महाभारत कथा की आंखों देखी खबरें बताता हूं। इस प्रकार माणिकलाल का परिवार और उसके सदस्यों के घटनाओं से का साक्षात्कार होता रहता है। कथा का निर्वाह इस तरह होता है की आपको महाभारत की कथा में भी रुचि आती है और माणिकलाल के जीवन चरित्र भी मोह लेता हैं। रचनाकार को चाहिए कि चरित्र के बिंदुओं को ना भूले। रचनाकार दिल्ली से मुंबई रेल से जाता है । यात्रा का आनंद लेते हुए यह कथानक आरंभ होता है। माणिकलाल महाभारत का संजय बनकर एक योगी की तरह उनके सामने प्रस्तुत होता है अपने साथ महाभारत की कथा भी सुनाता रहता है। यह एक अद्भुत और रहस्यमय अभिव्यक्ति है। दूसरा उदाहरण विष्णु प्रभाकर जी का आवारा मसीहा है। उन दिनों में कॉलेज में पढ़ता था और शरद चंद्र की पुस्तकें बहुत प्रिय थी। पढ़ते समय लगता था यह कैसे शरद चंद्र घरों में घुस घुस कर किसी पात्र के हृदय की बातें जान लेता है। इसी विषय वस्तु को विष्णु प्रभाकरजी ने घुमक्कड़ बनकर शरदचंद्र चट्टोपाध्याय की तरह भटक भटक कर छानबीन की है। ऐसा लगता ही नहीं विष्णु प्रभाकर घूम रहे हैं।ऋ बस ऐसे लगता है जैसे शरतचंद्र के साथ ही घूम रहे हैं।

लोकमान्य तिलक रंगून की जेल में गीता रहस्य लिखा । कारावास में रहते हुए इस प्रकार का कालजई ग्रंथ लिखना सहज नहीं है। इस ग्रंथ की प्रस्तावना महात्मा गांधी और महर्षि अरविंद ने लिखी है। विषय वस्तु तो लोकमान्य तिलक के मन में स्पष्ट थीं कि गीता रहस्य में क्या लिखना है । राजनीतिक कैदी होने के कारण उन्हें ज्यादा श्रमदण्ड नहीं था । अत: खाली समय का सही उपयोग करने की दृष्टि से उन्होंने साहित्य साधना का विचार किया। बाल्यकाल में मृत्यु शैया पर पड़े पारिवारिक सदस्य के लिए दो एक बार उन्हें गीता पाठ करने का अवसर मिला था। कालांतर में एक दो बार और अभ्यास का अवसर मिला। अत: विषय वस्तु स्पष्ट थी इस पर कुछ काम करना चाहिए। 50 वर्षों बाद पुन: इस विषय पर चिंतन करने का अवसर मिला।

महत्वपूर्ण बात यह है कि कारावास में जो भी कोरे कागज दिए जाते थे । कागजों पर कारागार की स्टैंप लगी होती थी और प्रत्येक पृष्ठ पर स्याही से नंबर लिखे जाते थे। जब उनके मन में यह विचार आया कि गीता रहस्य लिखना है। तो प्रामाणिकता होनी चाहिए। उन्होंने कारावास के प्रशासक से निवेदन किया कि उन्हें भगवत गीता पर? विशेष लेखन कार्य करना है । अत: अध्ययन के लिए कुछ ग्रंथों एवं पुस्तकों की आवश्यकता है जो मुंबई पुणे और बनारस से उपलब्ध हो सकते है। उन्होंने एक सूची बनाई और प्रशासन से लाने के लिए आग्रह किया। उनका आग्रह मान लिया गया।

कारावास प्रशासक ने चेतावनी देते हुए कहा, आप लिखा हुआ और कोरे कागज प्रतिदिन शाम को जेल में जमा करेंगे । अपने पास नहीं रखेंगे! आप एक राजनीतिक कैदी है। तभी आपको सामग्री दी जाएगी।

लेखन कार्य आरंभ हुआ और लगभग 900 पृष्ठ का गीता रहस्य लिखा गया जो लगभग 100 से अधिक भाषाओं में अनुवादित है। यह एक साहित्यिक और ऐतिहासिक प्रमाण के रूप में भी प्रसिद्ध है। आश्चर्य इस बात का है की लोकमान्य तिलक ने लगभग ढाई सौ पृष्ठों में इसकी भूमिका लिखी है । उसके पश्चात धर्मक्षेत्र कुरूक्षेत्रे समवेतायुयुत्सवा गीता ग्रंथ की टीका आरंभ होती हे। अर्थात ऐसे महान व्यक्ति को भी अध्ययन हेतु प्रमाणिक साहित्य? रचना के लिए चिंतन की आवश्यकता थी। लोकमान्य तिलक जैसे महान व्यक्ति जिन्होंने स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है यह नारा दिया था। जो दैनिक केसरी और दैनिक मराठा जैसे समाचार पत्र के बुद्धिमान संपादक थे। उन्होंने ने भी गीता रहस्य लिखने के लिए आवश्यक अध्ययन सामग्री रंगून की जेल में मंगाई। किस तरह मंगाई होगी इसकी कल्पना की जा सकती हैं। क्योंकि वे तो कारावास में राजनीतिक कैदी थे।

इसमें एक और महत्वपूर्ण विषय है कि जितने दिन वह रंगून की कारावास में रहे उन दिनों का लेखा-जोखा जेल में प्रतिदिन लिखा जाता था। रोज कोरे कागजों के साथ उन्हें एक पेंसिल और रबड़ दिया गया था। जिसका लिखित विवरण होता था। शाम को लिखें और कोरे, सारे कागज आफिस में जमा करने पड़ते थे। इस कारावास के जीवन में मात्र 3 या 4 दिन थे जिसमें उन्होंने कुछ नहीं लिखा था। शेष सारे दिनो का विवरण लिखित था । इससे यह भी स्पष्ट होता है कि महान व्यक्तियों की कार्यशैली कितनी प्रेरणादाई और मार्गदर्शक होती है। साहित्य केवल कल्पना का विषय नहीं है । अपने विषय के खोज और अनुसंधान का विषय है।

महर्षि अरविंद ने गीता रहस्य में अपनी प्रस्तावित भूमिका के अंत में लिखा है, लोकमान्य तिलक ने कारावास जैसे निर्जन और विषम परिस्थिति में ,गीता रहस्य एक सामान्य साहित्य नहीं,एक वांग्मय के रूप में प्रस्तुत किया है। यदि वे राजनीतिज्ञ ना होते दो बहुत बड़े ऋषि महर्षि होते । देश विदेश में जो बड़े-बड़े साहित्यकार हुए हैं उनकी अध्ययन क्षमता बहुत व्यापक थी। कई साहित्यकार तो दृष्टा के रूप में सामने आए हैं। साहित्य उनका व्यापार नहीं था अच्छे ग्रंथ अच्छे साहित्य की खोज ही उनका लक्ष्य रहा है। जो उन्हें सद्गति देने में सहायक रहा है। कुछ भी लिखना साहित्य नहीं है। साहित्य व है जिसको सहेज सके जो अपने आप स्मृति पटल पर रुक जाए।

यह भी निर्विवाद सत्य है कि हमारे शास्त्र एवं कलाएं अंततः आत्मिक विकास की ओर अर्थात परमात्मा की ओर ले जाते हैं । साधना का चरम बिंदु आत्मिक विकास ही है फिर चाहे साहित्यिक साधना हो या वैज्ञानिक साधना। इंद्रीयों? की प्यास बुझती जाती है और साधक आध्यात्मिकता से जुड़ता जाता है। अनेक प्रसिद्ध साहित्यकारों को देखे तो उन्हें साहित्य सृजन का चर्मोत्कर्ष आध्यात्म में ही दिखाई देता है। बड़े-बड़े महात्माओं संतों ने अध्यात्म से जुड़कर ही कालजई रचनाएं की है। उन्होंने लिखा नहीं, किंतु हम उसे लिख भी रहे है , पढ़ भी रहे हैं और गा रहे हैं तुलसीदास, कबीर सूरदास संत ज्ञानेश्वर संत तुकाराम, एकनाथ चैतन्य महाप्रभु, गुरु नानक , देव त्यागराजाआदि की रचनाएं अमर हो गई है। यह सामान्य सृजन कार्य नहीं है। इसके पीछे गहन तपस्या साधना महान विभूतियों से मेलजोल संगत या और चिंतन रहा है। आधुनिक काल में भी जो बड़े बड़े महान साहित्यकार हुए हैं उन्हें अंततः निवृत्ति मार्ग को ही थाम कर साहित्य सृजन किया है। मुंशी प्रेमचंद, दिनकर?,,मुक्ति बोध, सुमित्रानंदन पंत, निराला, मैथिलीशरण गुप्त, हजारी प्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा ऐसे ही अनेक साहित्यकार है। जिन्होंने श्रेष्ठ ही नहीं, कालजई रचनाएं प्रस्तुत की। इसलिए उनकी रचनाओं के साथ वह भी अमर हो गए। वर्तमान समय के नरेंद्र कोहली ने भी श्री राम, कृष्ण, विवेकानंद और महाभारत के विभिन्न विषयों को लेकर साहित्य दिया। जो बहुत उल्लेखनीय प्रसिद्ध रहा है । इल्मी और फिल्मी शाब्दिक पांडित्य के साहित्यकार यथार्थ को छोड़ विषय को जबरन खींचते जा रहे हैं। पैसों के लिए भक्ति की रचना भी कर रहे हैं भजन भी लिख रहे हैं और वासना के गीत भी परोस रहे हैं।

स्वामी दयानंद ने लिखना कब आरंभ किया जब वह 45 वर्ष के थे तब वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए स्वामी विरजानंद के पास मथुरा गए। अष्टाध्याई की शिक्षा लेने के बाद वे वेद मंत्रों का भाष्य करने में सहजता अनुभव करने लगे। इन 45 वर्षों में उन्होंने कितने ऋषि-मुनियों से शिक्षा दीक्षा ली । कहां-कहां घूमे ? यह आयु छोटी नहीं होती ! 12 वर्ष की आयु से ईश्वर की खोज में भाग रहे थे। कितने लोगों से कितना सीखा होगा उन्होंने? जब स्वामी विरजानंद के पास पहुंचे तो उन्होंने कहा, जो कुछ पढ़ा है और जो कुछ ग्रंथ तुम्हारे पास है वह सारे यमुना नदी में प्रवाहित करो उसके बाद हम बात करेंगे। ज्ञान की भूख थी वेदाभ्यास करना था स्वामी दयानंद सरस्वती ने उनकी सारी शर्तें मान ली। साहित्य सृजन करने के लिए पर्याप्त

अनुभव चिंतन और ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक होता है। अच्छे गुरुजनों की आवश्यकता होती है। अष्टाध्याई की शिक्षा लेने के बाद गुरु विरजानंद के आदेश पर उन्होंने देश में फैले अशिक्षा और अंधविश्वास को दूर करने का प्रण किया । उसके लिए शास्त्रार्थ की शुरुआत की।

मनुस्मृति के साथ, चारों वेदों पढ़ना शुरू किया। सत शास्त्रों का अध्ययन किया और फिर सत्यार्थ प्रकाश लिखा। गुजराती होते हुए भी उन्होंने जानबूझकर राष्ट्रभाषा हिंदी को अपनाया सीखने का प्रयत्न किया और सत्यार्थ प्रकाश को पुनः परिष्कृत हिंदी भाषा में प्रस्तुत किया। अनेक विद्वान लोग प्रकाश को पांचवा वेद भी कहते हैं। उन्होंने वेद सर्व सुलभ कर दिए। यही नहीं, वेदों को किस तरह पढ़ा जाए और जिससे उसका अर्थ सही निकल सके, इसलिए सर्वप्रथम ऋग्वेदादिभाष्य? लिखा। जिससे सर्व साधारण व्यक्ति वेद भाषा समझ सके। भी घोषणा की कि बिना ऋग्वेदादिभाष्य के किसी को चारों वेद नहीं मिलेंगे। इस तरह प्रमाणिकता के साथ असाधारण साहित्य सूजन स्वामी जी ने किया , एक नहीं अनेक ग्रंथ लिखें। मन महाराज के मनुस्मृति ग्रंथ ने उन्हें सबसे अधिक आकर्षित किया। कोई पुस्तक, ग्रंथ तभी बनता है जब उसमें मनुष्य का यथार्थ धर्म और कर्म प्रस्तुत हो। ग्रंथ सबके लिए ग्राह्यहोता है जो साहित्य आस्था के साथ ग्रहण करने योग्य होता है।

-नई दिल्ली

जे.के.स्टील फर्नीचर

१. पेट्रोल पंप के सामने,चूना भट्टी, कोलार मुख्य मार्ग,
२. सर्वधर्म कॉलोनी सी सेक्टर पुल समीप कोलार मुख्य मार्ग,
३. बरखेड़ी कलां मुख्य मार्ग, भोपाल

जीवन मारन स्वत्वाधिकारी

संपर्क-9826422823

COMING SOON

On

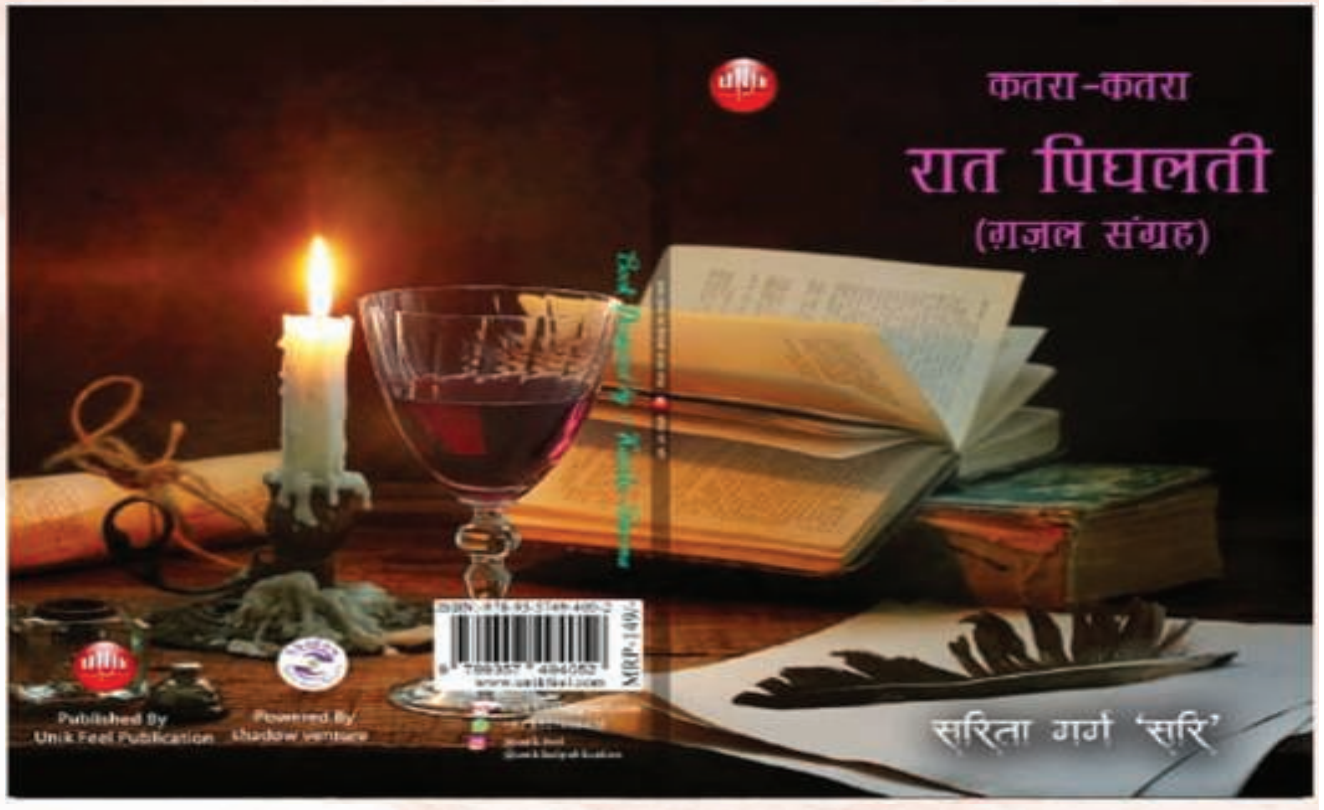

फुटवियर इंडिया एक्सपो का आयोजन प्रगति मैदान में

श्री सतीश कुमार
(निर्देशक)

भारत का पदवेश उद्योग विश्व में सबसे ज्यादा गतिशील उद्योग है । यह विश्व में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है।

भारत का यह फुटवियर इंडिया एक्सपो 10 सालों से निरंतर आयोजित हो रहा है और सफलता की यह सोलहवीं कड़ी है। जो प्रगति मैदान में आयोजित हो रहा है। अब तक फुटवियर इंडिया एक्सपो का आयोजन दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र के जापानी पार्क में आयोजित होता था। लगातार लोकप्रियता की सीढ़ियां चढ़ते हुए अब आयोजन प्रगति मैदान में हॉल नंबर 12 ए में 17 से 19 फरवरी 2023 को संपन्न होगा। हमेशा की तरह इस आयोजन में देश विदेश से हजारों व्यापारी उत्पादक सप्लायर डिज़ाइनर टेक्नोलॉजिस्ट शिरकत करते हैं।

फुटवियर इंडिया एक्सपो 16वे के निदेशक श्री सतीश शर्मा कहते हैं। हमारे इस आयोजन में 400 से अधिक उभरते ब्रांड अपने फुटवियर की वैरायटी को प्रदर्शित करेंगे। इसमें भी जूते चप्पल सैंडल स्लिपर्स की भरमार होगी। इस तरह लगभग एक लाख मॉडल इस आयोजन में दर्शकों को देखने को मिलेंगे। यूरोप–अमेरिका और दूर सुदूर पूर्वी देशों अरब देशों के व्यापारी और आपूर्तिकर्ता इस आयोजन में भाग लेंगे।

श्री सतीश कुमार का कहना है, "इस आयोजन में देश के प्रतिनिधि फुटवियर के थोक व्यापारी बहुत बड़ी संख्या में आते हैं। उन्हें अपने स्तर के सारे विकल्प मिलते हैं । साथ साथ उत्पादको और थोक व्यापारियों से तालमेल होता है। फुटवियर इंडस्ट्री के लोगों को एक मंच पर लाने का काम फुटवियर इंडिया एक्सपो करता है। आयोजन स्पष्ट करता है कि भारतीय फुटवियर इंडस्ट्री कितनी तेजी से उन्नति कर रही है और इसमें कितनी संभावनाएं हैं। पिछले आयोजन में 50 सालों से अधिक समय से काम करने वाले सफल थोक व्यापारियों को सम्मानित किया गया इस बार भी इसी तरह का सम्मान दिया जाएगा"

इस उद्योग में प्रवेश करने वाले नए लोगों को बहुत कुछ सीखने समझने का अवसर मिलेगा वही जो लोग पहले से ही इस कारोबार में लगे हैं उन्हें अपने प्रतिष्ठान को बढ़ाने और प्रभावी करने में मदद मिलेगी। फुटवियर कंपोनेंट्स का भी बहुत बड़ा कारोबार है बिना कंपाउंड्स के फुटवेयर बनाना संभव नहीं है यह क्षेत्र भी लगातार व्यापक होता जा रहा है इसमें निर्यात की भी बहुत संभावनाएं हैं। फुटवियर इंडिया एक्सपो में यह सब देखने समझने का अवसर मिलता है। अब तक 2 लाख से अधिक व्यापारियों ने लाभ उठाया।

16 वाँ
फुटवियर इण्डिया एक्सपो
17 18 19 फरवरी 2023

अपना स्टॉल आज ही बुक करें

फुटवियर इंडिया एक्सपो में अपना स्टॉल बुक कराके आप एक ही मंच पर देश दुनिया के व्यापारियों से जुड़ सकते है।

यह निवेश आपको, आपके व्यापार को और आपके ब्रांड को प्रचार प्रसार देगा और भविष्य में व्यापार की नई संभावनाएं खोलेगा।

Now in
Hall No. 12-A
Pragati Maidan, Delhi
TIMING: 10:00 AM TO 06:00 PM

इस बार के इस तीन दिन के एग्जिबिशन में देश दुनिया से लगभग 9000 से अधिक विजिटरों के आने का अनुमान है। तो आप किस बात का इंतजार कर रहे है? जल्दी कीजिए! कहीं ये मौका आपके हाथ से छुट न जाए? स्टॉल बुकिंग के लिए आज ही संपर्क करें।

स्टॉल बुकिंग के लिए सम्पर्क करें
+91 9810811603, 9311656606, 9555831116

PLAN YOUR VISIT TO

FEW DAYS TO GO

16th Edition

Footwear INDIA expo

www.footwearindiaexpo.in Delhi

DATES
17 18 19 FEBRUARY 2023

Venue:
Hall No. 12/A,
Pragati Maidan, New Delhi

FREE ENTRY

Satish Kumar : +91 9810811603
Dippti Sharma: +91 9555831116

Follow Us:

स्वामी-मुद्रक-प्रकाशक-संपादक कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी' द्वारा राघव भवन,गली क्र. 6/72 दयालपुर,दिल्ली 110090 से प्रकाशित,निर्दलीय प्रेस,भोपाल से मुद्रित।